आर्थिक सहायकः—

कलकत्ता निवासी श्रीमान् शेठ डोसाभाई लालचंद कच्छ-भुजवाले की स्वर्गीय धर्मपत्नी श्रीमती कंकुवाई के स्मरणार्थ.

पुस्तक-प्राप्ति-स्थान:—

( १ ) शाह मफतलाल माणेकचंद
श्री चारित्र-स्मारक ग्रन्थमाला-वीरमगाम (गूजरात).

( २ ) शेठ डोसाभाई लालचंद
नं. ३ वाउस्ट्रीट-कलकत्ता.

मुद्रक

शेठ देवचंद दामजी
आनंद प्रेस-भावनगर.

# निवेदन

कवि चंडकृत प्राकृत लक्षण प्राकृतभाषा के अभ्यासियों की सेवा में सादर समर्पित करते हमें अति हर्ष होता है।

कलकत्तानिवासी श्रीमान् सेठ डोसाभाई लालचंद कच्छभुजवाले ने
अपनी स्वर्गीय धर्मपत्नी श्रीमती कंकुबाई के स्मरणार्थ
इस ग्रंथ के मुद्रण में आर्थिक सहायता करने की
जो उदारता की है इस के लिये हम आप के
अत्यंत ऋणी हैं व आशा करते हैं
कि आयंदे भी आप ऐसी ही
उदारता कर के साहि-
त्य के प्रचार मे
सहायता करते
रहेंगे ।

—प्रकाशक

# प्रस्तावना

**साहित्य की आवश्यकता—**

जीवनविकास की साधना में, विश्व की गहन समस्याओं के सुलझाने में, जीवन का रहस्य समझने में, मनोविनोद के लिए एवं यावत् आत्मशुद्धि के पवित्र पथ से आत्मसिद्धि को प्राप्त करने के प्रयत्नों में साहित्य एक अति उपयोगी साधन है। साथ ही साथ वह अति निर्दोष एवं पवित्र भी है ही। जीवनचर्या में अन्न और जल के जितनी ही साहित्य की आवश्यकता व महत्ता है। साहित्यरस से रहित जीवन रसहीन कहा जा सकता है।

इस तरह साहित्य को अति महत्त्व की वस्तु समझ कर जब उस पवित्र मंदिर में प्रवेश करने की अभिलाषा उत्पन्न होती है तब उस साहित्य को यथास्थित समझने के लिए ग्रहणशक्ति—बुद्धि—ज्ञान की आवश्यकता प्रतीत होती है। बुद्धि—ज्ञान के लिए भाषा ही एक मात्र सीधा व उत्तम साधन है; क्यों कि—भाषा और ज्ञान परस्पर में इस तरह मिले हुए तत्त्व हैं कि उनको एक दूसरे से सर्वथा भिन्न करना अशक्य है, अर्थात ज्ञान का मूर्तस्वरूप भाषा में ही विकसित होता है। और भाषा का अर्थ शब्द नहीं तो और क्या हो सकता है? एक विचारक ने बिलकुल ठीक ही कहा है कि—" अनुविद्धमिव ज्ञानं, सर्वं शब्देन भासते। "

## व्याकरण की आवश्यकता—

इस तरह किसी भी साहित्य में प्रवेश करना हो तो सब से पहले जिस भाषा में उस साहित्य का सर्जन हुआ हो उस भाषा को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। और किसी भी भाषा के ज्ञान के लिए उस भाषा का शब्दशास्त्र—व्याकरण ही मुख्य साधन है। इस तरह भाषाज्ञान की दृष्टि से किसी भी भाषा के व्याकरण का स्थान प्रथम है। अलबत, विविध रसों से भरी हुई अन्य साहित्य–कृतियों के आगे व्याकरण एक अति शुष्क एवं रसहीन विषय प्रतीत होता है। फिर भी इस शुष्कता मात्र से उसकी निरुपयोगिता या अल्प उपयोगिता तिल मात्र भी सिद्ध नहीं होती।

## प्राकृत भाषा के ज्ञान की अनिवार्य आवश्यकता कहाँ?

अनेकानेक विद्वानों ने, भिन्न भिन्न विषय के अनेक ग्रन्थों की रचना करके, प्राकृत भाषा के साहित्य को समृद्ध बनाया है, और प्राकृत भाषा के ज्ञाता विद्वान् उस रस का उपभोग भी कर सकते हैं; फिर भी प्राकृत भाषा के ज्ञान की अनिवार्य आवश्यकता कहां है?—यह एक चर्चा के योग्य विषय है।

किसी भी तत्त्वज्ञान का रहस्य, उस तत्त्वज्ञान संबंधी परभाषा में लिखे हुए ग्रंथों के वाचन से या उस तत्त्वज्ञान के मुख्य मुख्य सिद्धांतों का नामनिर्देशरूप ज्ञान प्राप्त करने से नहीं समझा जा सकता। किन्तु किसी एक विषय को संपूर्णतया समझने के लिए उस विषय के पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान आवश्यक है ठीक उसी तरह, किसी भी तत्त्वज्ञान के रहस्य को समझने के लिए सब से प्रथम जिस भाषा में उस तत्त्वज्ञान ने मूर्त-

स्वरूप लिया हो–उस तत्त्वज्ञान के प्ररूपक महापुरुष ने जिस भाषा का उपयोग किया हो–उस भाषा के ज्ञान की आवश्यकता है। और जैसे किसी देशविशेष या जातिविशेष के साथ विशिष्ट प्रकार की संस्कृति, रीतरिवाज, वेषभूषा की रुचि और खानपान की पसंदगी संलग्न होती है वैसे ही विश्व के हरएक तत्त्वज्ञान की एक विशेष–मौलिक भाषा अवश्य होती है। यदि नया यौगिक शब्द बनाना अनुचित न हो तो मैं तो बिना संकोच कहुंगा कि जैसे हरएक विषय के खास पारिभाषिक शब्द होते हैं वैसे हरएक तत्त्वज्ञान की खास पारिभाषिक भाषा होती है कि जिस भाषा में ही उस तत्त्वज्ञान की हरएक खूबी समझ में आती है।

हिन्दू धर्म और उसकी प्रत्येक शाखा का तत्त्वज्ञान संस्कृत भाषा में अवतीर्ण हुआ है। अलबत, वर्तमान संस्कृत भाषा और वैदिक संस्कृत भाषा में कुछ विशेषता–भिन्नता अवश्य है किन्तु वह है तो संस्कृत भाषा ही। एक दृष्टि से यह वैदिक संस्कृत भाषा प्रायः अति प्राचीन–५००० वर्ष जितनी प्राचीन प्राकृत भाषा हो सकती है। बुद्धदेव ने बताया हुआ तत्त्वज्ञान पाली भाषा में है, इस्लाम का तत्त्वज्ञान, आदि में, अरबी भाषा में बना है, और पारसीयों के तत्त्वज्ञान की मूल भाषा है अवेस्ता–पहेलवी। इसी तरह परमात्मा महावीरदेवप्ररुपित तत्त्वज्ञान की भी एक विशेष भाषा है और वह प्राकृत भाषा। अलबत, प्राकृत के परामर्श के समय मागधी या अर्धमागधी ( कि जिस में मुख्यतया मौलिक जैन शास्त्रों की रचना हुई है ) के भेद को भूलना नहीं चाहिए.

फिर भी वह भेद अति अल्प होने से वे भाषायें एक ही सरीखी भाषायें हैं।

यद्यपि संस्कृत भाषा में जैन साहित्य के भिन्न भिन्न विषयक अनेक महान् ग्रंथ बने हैं, **बारहवाँ अंग दृष्टिवाद-चतुर्दशपूर्व** भी संस्कृत भाषा में ही था (जिसका विच्छेद हुआ है, जो उपलब्ध नहीं है)। कितनेक ग्रंथ तो उस भाषा में मौलिक से प्रतीत होते हैं और किसी अपेक्षा से-विपुलता की दृष्टि से तो संस्कृत भाषा में बना हुआ जैन साहित्य प्राकृत भाषा में बने हुए जैन साहित्य से बढ़ भी जाता है, फिर भी जैन तत्त्वज्ञान की मौलिकता की दृष्टि से प्राकृत भाषा का स्थान प्रथम है। अतः जैन तत्त्वज्ञान का आंतर रहस्य समझने के लिए प्राकृत भाषा के ज्ञान की अनिवार्य आवश्यकता है। या स्पष्टतया कह सकते है कि प्राकृत भाषा के ज्ञान के बिना कोई विद्वान् जैन तत्त्वज्ञान विषयक स्वतंत्र या संपूर्ण विचारणा नहीं कर सकता।

संस्कृत भाषा के नाटक एवं अन्य कितनाक साहित्य समझने में भी प्राकृत भाषा का ज्ञान उपयुक्त होता है।

**प्राकृत भाषा की विशेषता—**

प्राकृत भाषा के संबंध में विचार किया जाय तो कहना चाहिए कि वह आर्षभाषा है, परमतारक तीर्थंकर और गणधरों की भाषा है, एक शास्त्रीय भाषा है। सिर्फ इतना ही नहीं वरन् वह भारतीय सभी भाषाभाषियों को मानों अपनी नीजी भाषा हो ऐसी घरेलु भाषा प्रतीत होती है, याने वह युग-पुरातन एवं भारतीय सभी भाषाओं की मातृभाषा हो और

उन सभी भाषाओं का उत्थान प्राकृत भाषा में से हुआ हो ऐसा प्रतीत होता है। उसमें न उच्चार की क्लीष्टता है और न संयुक्त अक्षरों की अधिक जटिलता। इसी कारण से यह भाषा सरल एवं मधुर लगती है, और आबालवृद्ध सब कोई इसका आसानी से उपयोग कर सकता हैं।

## प्राकृत और संस्कृत—

संस्कृत भाषा अधिक पुरातन है या प्राकृत?—इस चर्चा के लिये यहाँ अवकाश नहीं है, न इतनी आवश्यकता ही है। इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि भगवान् महावीर देव के समय वे दोनों ही भाषायें प्रचलीत थीं। फिर भी १२ अंगो में से ११ अंग प्राकृत भाषा में और १२ वाँ अंग दृष्टिवाद संस्कृत भाषा में ग्रथित कर के गणधर भगवान ने प्राकृत को विशेष स्थान दिया। इसका कारण यह है कि संस्कृत भाषा पंडित-भोग्य भाषा है और प्राकृत भाषा लोकभोग्य भाषा है, जिसको कि हरएक आसानी से समझ सकता है। वर्तमान समय की अपेक्षा से ये दोनों ही भाषा समानतया महत्त्वपूर्ण हैं। जैन साहित्य और जैन तत्त्वज्ञान के रहस्य का जिज्ञासु कोई भी विद्वान् उन दोनो भाषा में से एक भी भाषा की उपेक्षा नहीं कर सकता। अतः ये दोनों ही भाषा आर्यावर्त—आर्य संस्कृति की महत्त्व की भाषा हैं।

## प्राकृत भाषा के व्याकरण—

प्राकृत भाषा का सब से प्राचीन व्याकरण महर्षि पाणिनी कृत प्राकृतलक्षण है जो आज उपलब्ध नहीं है, किन्तु जिस के होने का उल्लेख कितनेक अन्यान्य ग्रंथों में मिलता है;

इस व्याकरण के अतिरिक्त वर्तमान में अनेक व्याकरण उपलब्ध हैं, वे हैं—वररुचिकृत प्राकृतप्रकाश, हृषिकेशकृत प्राकृतव्याकरण, मार्कंडेयकृत प्राकृतसर्वस्व, कामदीश्वरकृत संक्षिप्तसार प्राकृत–व्याकरण, लक्ष्मीधररचित षड्‌भाषाचंद्रिका, विक्रमदेवरचित प्राकृतानुशासन, कलिकालसर्वज्ञ आचार्यवर्य श्रीहेमचंद्रसूरिविरचित सिद्धहेमशब्दानुशासन ( संस्कृत व्याकरण ) के अष्टम अध्यायरूप प्राकृतव्याकरण और कवि चंडकृत, प्रस्तुत प्राकृतलक्षण आदि। इन व्याकरणों में से अन्त में दिये हुए तीनों व्याकरण जैन विद्वानों के रचे हुए हैं और उनमें व अजैन विद्वानों के रचे हुए प्राकृत भापा के व्याकरणों में भी आचार्यदेव श्री हेमचंद्रसूरिरचित व्याकरण अति विस्तृत एवं संपूर्णतायुक्त है।

## कवि चंडकृत ( प्रस्तुत ) प्राकृतलक्षण—

प्रस्तुत, कवि चंडकृत प्राकृत व्याकरण (प्राकृतलक्षण) को सूत्रसंक्षेप की दृष्टि से, उपर्युक्त सभी व्याकरणों में प्रायः प्रथम स्थान प्राप्त होता हे। इस व्याकरण से छोटा प्राकृत भापा का दूसरा कोई व्याकरण प्रायः नहीं है। आचार्यवर्य श्री हेमचन्द्रसूरि का व्याकरण संपूर्ण अवश्य है किन्तु वह अधिक विशाल है और यह प्राकृतलक्षण बहुत संक्षिप्त होने के कारण आसानी से पढ़ा जा सकता है। अलबत, इस व्याकरण के अध्ययन करने पर भी प्राकृत भापा के ज्ञान में कितनीक त्रूटियाँ अवश्य रह जाती हैं तो भी मुख्य मुख्य सभी वस्तु इस में समाविष्ट होने के कारण वर्तमान अभ्यासियों के लिये ऐसा लघु व्याकरण अधिक उपयुक्त मालूम होता है।

इस व्याकरण के रचयिता कवि चंड के विषय में कोई भी इतिवृत्त ( इतिहास ) प्राप्त नहीं होने के कारण कवि चंड विषयक या इस व्याकरण विषयक ऐतिहासिक पहलु पर प्रकाश डाल सके ऐसी कोई विचारणा नहीं हो सकती।

यह प्राकृतलक्षण सब से पहले एसियाटिक सोसाईटी की तर्फ से मुद्रित हुआ था। इसके पश्चात् अन्यान्य स्थानों से भी इस के भिन्न भिन्न संस्करण प्रकाशित हुए हैं, अतः इस ग्रंथ का यह कोई प्रथम मुद्रण या प्रकाशन नहीं है। इसके मुद्रण के समय हमने एसियाटिक सोसाईटी से प्रकाशित व अन्यान्य स्थानों से प्रकाशित ग्रंथ का निरीक्षण किया है। मुझे कहेना चाहिए कि उन प्रकाशनों तथा दूसरी हस्तलिखित प्रतियों के साथ प्रस्तुत व्याकरण का मुकावला करने पर कितनेक पाठांतर तथा अधिक पाठ देखने में आये हैं, किन्तु प्रस्तुत प्रकाशन प्राकृत भाषा के प्राथमिक अभ्यासियों के लिए उद्दिष्ट होने से, जटिलता के भयसे, उन सब को इस में समाविष्ट न करते हुए छोटे से छोटी-कमसे कम ( फिर भी सभी मुख्य मुख्य बातों को समाविष्ट करते ) सूत्रयुक्त प्रति के आधार पर यह प्रकाशन तैयार किया गया है। अस्तु।

प्राकृतभाषा का अभ्यास—

एक बात तो बिलकुल निश्चित है कि प्राकृतभाषा का व्यवस्थित ज्ञान संस्कृत भाषा के व्यवस्थित ज्ञान के सिवाय अशक्य सा है। अतः प्राकृतभाषा के अभ्यासी को संस्कृत भाषा का ज्ञान अवश्य संपादन करना चाहिए। अब विचारणीय मात्र इतना ही है कि संस्कृत भाषा का ज्ञान होने के पश्चात

प्राकृतभाषा का बोध किस क्रमसे अधिक सरलता से हो सके। यह प्रश्न, एक प्रश्न की दृष्टि से, विशेष महत्त्व का न होते हुए भी प्राकृत भाषा के भिन्न भिन्न, अभ्यासी, अनुभवी विद्वानों की दृष्टि से उसके लिए भिन्न भिन्न अभिप्राय को अवकाश है।

मेरे विनम्र अभिप्राय अनुसार प्राकृतभाषा के अभ्यास के समय, संस्कृत भाषा में बने हुए प्राकृत भाषा के किसी व्याकरण विशेष को मुख्य मानने पर भी, अभ्यास का सभी आधार केवल उस व्याकरण पर ही न रखके साथ में प्राकृत साहित्य का, खास करके व्याकरण की दृष्टि से, वाचन करना चाहिए और वर्तमान में जिसे Direct method ( याने भाषा के जरिये से व्याकरण के नियम निश्चित करने की पद्धति ) कहते हैं उस पद्धति का आश्रय लेना चाहिए। ऐसा करने से अल्प समय में व आसानी से प्राकृत भाषा का संगीन बोध हो सकता है। सिर्फ प्राकृत भाषा के ही लिए क्यों ? किसी भी भाषा के अभ्यास के लिए यह मार्ग अधिक लाभप्रद व सरल है।

कहासंग्गहो—

मैंने उपर जिसका सूचन किया है उस Direct method ( भाषा से व्याकरण की पद्धति ) के अनुसरण में उपयुक्त हो सके इस दृष्टि से इस व्याकरण के अंत में कितनीक कथाओं का संग्रह दिया है। वे सभी कथायें श्री आगमोदय समिति—सुरत-द्वारा मुद्रित श्री उत्तराध्ययनसूत्र की चतुर्दशपूर्वधर आचार्य श्री भद्रबाहुस्वामीकृत निर्युक्ति के उपर की आचार्य श्री शांतिसूरि-कृत टीका में से; आवश्यकसूत्र की चतुर्दशपूर्वधर आचार्य श्री भद्रबाहुस्वामीरचित निर्युक्ति के उपरकी आचार्य श्री हरिभद्रसूरि-

कृत टीका में से तथा पूज्यवर्य श्री संघदासगणिकृत वसुदेव-हींडी में से अक्षरशः उद्धृत की हैं। अंत में दिया हुआ पद्य विभाग उत्तराध्ययनसूत्र में से अवतारित किया है उन सब का क्रमशः विवरण निम्न प्रकार है—

### श्री उत्तराध्ययन से उद्धृत—

| अंक | नाम | अध्ययन | सूत्र | निर्युक्ति गाथा | पत्रांक |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | सिरिथूलभद्दचरियं | ८ | १७ | १०० से १०५ | १०५–१०७ |
| २ | दंडगारणस्स उप्पत्ति | २ | २७ | १११ से ११३ | ११५–११६ |
| ३ | वोडीयमयस्स समुप्पत्ति | ३ | | १७८ | १७८–१८० |
| ४ | मल्लकहाणगं | ४ | १ | — | १९२–१९१ |
| ५ | वाणियगपुत्तकहा | ७ | १५ | — | २७८-२७९ |

### श्री आवश्यकनिर्युक्ति से उद्धृत—

| अंक | नाम | निर्युक्ति गाथा | पत्रांक |
|---|---|---|---|
| ६ | अभयकुमार पव्वज्जा | १३४ | ९५–९६ |
| ७ | मुग्गसेल मेहसंवादो | १३९ | १००–१०१ |
| ८ | भरहबाहुबलिजुद्धम् | ३४८ | १५२–१५३ |
| ९ | मेअज्जरिसिचरियम् | ८६८ | ३६६–३६९ |
| १० | तेतलिपुत्तचरियम् | ८७८ | ३७३–३७४ |
| ११ | जमदग्गि—परसुरामचरियम् | ९१८ | ३९१–३९२ |
| १२ | चाणक्ककहाणगं | ९५० | ४३३–४३५ |

### वसुदेवहींडी से उद्धृत—

१३ संब—सुभाणूणं कीडाओ

१४ कंसस्स पुव्वभवो कण्हजम्मो य

उत्तराध्ययन से उद्धृत—

१५ माहणसरूवं—

प्रस्तुत प्राकृत व्याकरण कलकत्ता विश्वविद्यालय के अभ्यास-क्रम में समाविष्ट है और वर्तमान में उसकी मुद्रित प्रति बिलकुल अलभ्य है अतः इसका पुनर्मुद्रण किया जा रहा है। इसके पुनर्मुद्रणकी प्रेरणा करने के लिये तथा इसके प्रुफ का संशोधन करने के लिये कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्राकृत के व्याख्याता न्याय-व्याकरणतीर्थ, पंडितवर्य श्री हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ धन्यवाद के पात्र हैं। इसके मुद्रण में आर्थिक सहायता करने के लिए श्राद्धरत्न श्री डोसाभाई लालचंद की उदारता सराहनीय है।

आशा है कि जिस उद्देश से इस छोटे से ग्रंथ का पुनर्मुद्रण किया है वह उद्देश सफल होगा व प्राकृतभाषा के अभ्यासियों को इस से यत्किंचित् भी सहायता अवश्य पहुंचेगी।

अजमेर
वीरनिर्वाण सवत् २४६२
अक्षयतृतीया.
ता० २४-४-१९३६

मुनि दर्शनविजय

# प्राकृत लक्षणम्



। ॐ नमः सिद्धेभ्यः ।

। श्रीचण्डप्रणीतम् ।

# ॥ प्राकृतलक्षणम् ॥



प्रणम्य शिरसा वीरं, स्वल्पैर्व्यापिभिरक्षरैः ।
लक्षणं प्राकृतं वक्ष्ये, किञ्चिद् वृद्धमतादहम ॥ १ ॥

क्वचिल्लोपः क्वचित सन्धिः, क्वचिद्वर्णविपर्य्ययः ।
आगमोऽन्तादिमध्येषु, लक्ष्यं स्यात तत्तु भाषितम ॥ २ ॥

# अथ विभक्तिविधानम् ॥ १ ॥

## सिद्धं प्राकृतं त्रेधा ॥ १ ॥

सिद्धं–प्रसिद्धं प्राकृतं त्रेधा–त्रिप्रकारं भवति । संस्कृतयोनि, तच्चेदं,–यज्ञः–जन्नो, मात्रा–मत्ता, नित्यं निच्चं इत्यादि । संस्कृतसमं, तच्चेदं,–सूरो, सोमो, जालं, कन्दलं, कोमलं इत्यादि । देशीप्रसिद्धं, तच्चेदं,–हषितं–ल्हसिअं, स्पष्टं–पुट्ठं, चन्द्रिकोज्वलितं–चंदिकोज्जलीय इत्यादि ।

## लिङ्गं च ॥ २ ॥

प्राकृते लिङ्गमपि त्रेधा–त्रिप्रकारं भवति ।
देवो । गङ्गा । कुलम् ॥

## तस्मात् संस्कृतवद् विभक्तयः ॥ ३ ॥

तस्माल्लिङ्गात् पराः संस्कृतवद्विभक्तयो भवन्ति ।

सि—देवो, अग्गी, रिऊ, बुद्धी, धेणू, नई, वहू, पीढं, दहि, महु, तुमं, अहं ।

जस्—देवा, कुलानि, तुम्हे, अम्हे ।

अम्—देवं, अग्गिं, गुरुं, गंगं, बुद्धिं, धेणुं, नइं, पीढं, दहिं, महुं, त्वां–तं, मां–मं, रक्खउ ।

शस्—गंगा, तुम्हे रक्खउ रक्खउ वो ( वः ), अम्हे रक्खउ, रक्खउ नो ( नः ) ।

टा—देवेण, गुरुणा, दहिणा ।

भिस्—अग्गीहिं, रिवूहिं, बुद्धीहिं, नईहिं, दहीहिं, महूहिं, तुम्हेहिं, अम्हेहिं ।

ङसि—तस्स, तिस्सा ।

भ्यस्—ग्रामेभ्यः—गामेहिंतो, गुरुभ्यः—गुरूहिंतो, धेणूहिंतो, नईहिंतो, दोहिंतो, वेहिंतो, तीहिंतो ।

ङस्—पुत्तो ते, पुत्तो मे, तव सुहं, मम सुहं ।

आम्—देवाणं, बुद्धीणं, धेणूणं, नईणं, तेसं, तेसिं ।

ङि—गामे, कुले, तत्र-तत्थ, तस्मिन्-तम्हि, त्वयि-तइ, मइ ।

सुप्—देवेसु, अग्गीसु, बुद्धीसु, मालासु, नईसु, कुलेसु, तुम्हेसु, अम्हेसु, इत्यादि ॥

## क्वचिद् व्यत्ययः ॥ ४ ॥

एषां लिङ्गाना क्वचिद् व्यत्ययो भवति । जस्—विज्जुणो । देवाणि रक्खंतु ॥

## सागमस्याप्यामो णो हो वा ॥ ५ ॥

सागमस्यामोऽनागमस्यापि णकारो भवति, हो वा । ताणं, ताहं । देवाणं, देवाहं । कम्माणं, कम्माहं । सरिताणं, सरिताहं । तुम्हाणं, तुम्हाहं ॥

## संख्याया ण्हः ॥ ६ ॥

संख्यायाः परस्य सागमस्याऽनागमस्याप्यामो ण्हो भवति । पंचण्हं, तीमण्हं इत्यादि ॥

## टा णः ॥ ७ ॥

लिङ्गात् परटा इत्यस्य ण आदेशो भवति। देवेण, गुरुणा, महुणा, दहिणा, सिरेण इत्यादि ॥

## हिं भिसः ॥ ८ ॥

लिङ्गात् परस्य भिसो हिं भवति। देवेहिं, गामेहिं ॥

## हिंतो भ्यसः ॥ ९ ॥

लिङ्गात् परस्य भ्यसो हिंतो भवति । गामेहिंतो, सिद्धिहिंतो, वुद्धीहिंतो, धेणूहिंतो, णईहिंतो, तुम्हेहिंतो, अम्हेहिंतो ॥

## तृतीयादीनामेत्वमेकत्वे स्त्रियाम् ॥ १० ॥

तृतीयादीनां टा-ङसि-ङस्-ङिवचनानां स्त्रियां ए भवति । गंगाए । वुद्धीए । नईए । वहूए । तीए । ताए ।

## ओ-उ-लोपा जस्-शसोः ॥ ११ ॥

स्त्रियां वर्तमानयोर्जस्-शसोरो-उ-लोपाश्च भवन्ति । मालाओ, मालाउ, माला । वुद्धीओ, वुद्धीउ, वुद्धी । धेणूओ, धेणूउ, धेणू । नईओ, नईउ, नई । एवं शसोऽपि ।

## द्वि-त्रिशब्दाभ्यां जस्-शसोर्णिः ॥ १२ ॥

द्वि-त्रिशब्दाभ्यां जस-शसोर्णिर्भवति । दुण्णि, विण्णि, दुवे, दो, वे । तिण्णि । एवं शसोऽपि ।

## पुंसि पूर्वत्वम् ॥ १३ ॥

पुंसि–पुंलिङ्गे वर्तमानयोर्जस्–शसोः पूर्व्वस्वरो भवति । अग्गी । गुरू ।

## णो ङसेश्च ॥ १४ ॥

पुंलिङ्गे वर्तमानयोर्जस्–शसोर्णो भवति, पञ्चम्येकवचनस्य च । अग्गिणो जलन्ति । मुणिणो पस्स । गिरिणो एति नई ।

## स्सश्च ङसः ॥ १५ ॥

पुंसि वर्तमानस्य ङसो णो भवति, स्सश्च भवति । मुणिणो रूपं, मुणिस्स रूपं । अग्गिणो सिहा, अग्गिस्स सिहा । देवस्स सोहा ।

## ए म्मि ङेः ॥ १६ ॥

पुंसि ङिवचनस्य ए भवति । म्मि च भवति । अग्गिम्मि । गुरुम्मि । गामे, गामम्मि ।

## ए शसोऽतः ॥ १७ ॥

अतोऽकारादुत्तरस्य शसः पुंलिङ्गे ए भवति । देवे, बंभणे ।

## तो–तु–हिंतो–लोपास्तस्याऽऽतः ॥ १८ ॥

पञ्चमी–आतः आदेशतकारस्य तो–तु–हितो–लोपा एते आदेशा भवन्ति । गयणाओ, गयणाउ, गयणाहिंतो, गयणा ।

## तदिदमोः से षष्ठीरूपाणाम् ॥ १९ ॥

तद्–इदम् अनयोरेकत्व–द्वित्व–बहुत्वेषु स्त्री–पुं–नपुंसकेषु यद् रूपं तस्य से भवति। तस्याः रूपं–से रूपं। तस्याः–गुणाः–से गुणा। अस्याः रूपं–से रूपं। अस्याः गुणाः–से गुणा। एवं शेषेष्वपि द्रष्टव्याः।

## युष्मदः ॥ २० ॥

अत ऊर्ध्वं युष्मदध्यायो भवति।

## तुमं सौ सविभक्तेः ॥ २१ ॥

युष्मच्छब्दस्य सविभक्तेः सौ परतः तुमं आदेशो भवति। तुमं देवो।

## अमि तुए च ॥ २२ ॥

युष्मदोऽमि परे तुमं भवति, तुए च सविभक्तेः। तुमं भणामि। तुए भणामि।

## तुम्हे जसि ॥ २३ ॥

युष्मदो जसि परे तुम्हे भवति, सविभक्तेः। तुम्हे मणुस्सा सूरा।

## तुब्भे शसि ॥ २४ ॥

युष्मदः शसि परे तुब्भे भवति, सविभक्तेः। तुब्भे मणुस्से भणामि।

## ते–तुमे–तइ–तए टायाम् ॥ २५ ॥

युष्मदः टावचने परे ते–तुमे–तइ–तए एते आदेशा भवन्ति सविभक्तेः। किं ते कतं। तुमे दिट्ठो। तइ मज्जं कतं। तए पलत्तं।

## तुमाहिं–तुमाहिंतो–तुमातो–तइत्तो पञ्चम्याम् ॥ २६ ॥

युष्मदः पञ्चम्येकवचने परे तुमाहिं–तुमाहिंतो–तुमातो–तइत्तो एते आदेशा भवन्ति, सविभक्तेः। तुमाहिं अहं सूरो। तुमाहिंतो अहं सुहओ। तुमातो अहं नाणी। तइत्तो निक्खंतो।

## तुह–तुज्झ–तुम्ह षष्ठ्याम् ॥ २७ ॥

युष्मदः षष्ठ्येकवचने परे तुह–तुज्झ–तुम्ह एते आदेशा भवन्ति, सविभक्तेः। तुह सीलं। तुज्झ कलाओ। तुम्ह गुणा ॥

## तुम्हमामि ॥ २८ ॥

युष्मदः आमि परे तुम्हमादेशो भवति, सविभक्तेः। तुम्हं चिय ते गुणा–युष्माकमेव ते गुणाः।

## तइ ङौ ॥ २९ ॥

सविभक्तेः। तइ। तुम्हम्मि। तुम्हेसु।

## अस्मदः ॥ ३० ॥

अत ऊर्ध्वं अस्मदध्यायो भवति ॥

## हउं–हं–अहं सौ सविभक्तेः ॥ ३१ ॥

असमदः सौ परे हउं–हं–अहं–एते आदेशा भवन्ति, सविभक्तेः । हउं सो णरो । तेण हं विद्धो । अहं कयपणामो ।

## अम्हे जसि ॥ ३२ ॥

अस्मदो जसि परे अम्हे भवति, सविभक्तेः । अम्हे मणुस्सा सूरा–वयं मनुष्याः शूराः ।

## ममम्मि ॥ ३३ ॥

अस्मदोऽमि परे ममादेशो भवति, सविभक्तेः । मं पेच्छ–मां पश्य ।

## अम्हे शसि ॥ ३४ ॥

अस्मदः शसि परे अम्हे भवति, सविभक्तेः । अम्हे पेच्छ–अस्मान्पश्य ।

## मे–मए टायाम् ॥ ३५ ॥

अस्मदः टावचने परे मे–मए भवतः, सविभक्तेः । मे कतं । मए दिट्टं ।

## मइत्तो ङसौ ॥ ३६ ॥

अस्मदः पञ्चम्येकवचने परे मइत्तो भवति, सविभक्तेः । मइत्तो तुमं सूरो ।

## अम्हाहिंतो भ्यसि ॥ ३७ ॥

अस्मदो भ्यसि परे अम्हाहिंतो भवति, सविभक्तेः । अम्हाहिंतो तुमं सूरो ।

## मह--मज्झ ङसि ॥ ३८ ॥

अस्मदः षष्ठ्येकवचने परे मह—मज्झ भवतः, सविभक्तेः । मह सीलं, मम शीलं । मज्झ गुणा, मम गुणाः ।

## अम्हमामि ॥ ३९ ॥

अस्मदः आमि परे अम्हं भवति, सविभक्तेः । अम्हं चिय ते दोसा, अस्माकं ( एव ) ते दोषाः ।

## मइ ङौ ॥ ४० ॥

सविभक्तेः । मइ, अम्हम्मि । अम्हेसु ।

इति चण्डकृते प्राकृतलक्षणे

## विभक्तिविधानं प्रथमं समाप्तम् ॥



# अथ २ स्वरविधानमाह—

## संस्कृतवत् संधिकार्यं पदयोः ॥ १ ॥

प्राकृते पदयोर्यत् सन्धिकार्यं, तत् संस्कृतोक्तवद् भवति।

## स्वराणां स्वरे प्रकृति–लोप–सन्धयः ॥ २ ॥

स्वराणां स्वरे परे प्रकृतिर्लोपः सन्धयश्च भवन्ति। इह अच्छति। इहच्छति। इहागतो। मह इव हितो। देविंदवंदितो। सक्कीसाणा। स ईसरो। तियसीसो। गहेसो। चंदुज्जला। तपोपरोहो। सा ऊढा। नीसासूसासा। मोरो। गामओ। गामो। बुद्धी इमा। बुद्धिंदो। बुद्धीसो। बुद्धीओ। नईओ।

## स्वरस्योद्वृत्ते ॥ ३ ॥

व्यञ्जनसंपृक्तस्वरो यो व्यञ्जने लुप्तेऽवशिष्यते, स उद्वृत्त इहोच्यते। स्वरस्य उद्वृत्ते स्वरे परे सन्धिर्न भवति। गगनं–गअणं। गन्धकुटी–गन्धउडी।

## न युवर्णस्याऽस्वे ॥ ४ ॥

इवर्णस्य उवर्णस्य चाऽस्वे वर्णे परे सन्धिर्न भवति। न वैरिवर्गे अपि अवकाशः–ण वेरिवग्गेवि अवयासो।

## संयोगे परे लोपः ॥ ५ ॥

संयोगे परे स्वरे परतः पूर्वस्वरस्य नित्यं लोपो भवति। धनाढ्यः–धनड्ढो। देव इन्द्रः–देविंदो। कृत उद्योगः—कतुज्जोओ।

## ह्रस्वत्वं संयोगे ॥ ६ ॥

स्वराणां ह्रस्वत्वं भवति, संयोगाऽक्षरे परे। कन्वं। कज्जं। इच्छिअं। तिक्खं। सिग्घो। उड्ढं। सुज्जो।

## स्वरोऽन्योऽन्यस्य ॥ ७ ॥

स्वरोऽन्योऽन्यस्य स्थाने भवति। कातन्त्रं। सुइणं। इंगाला। विंशतिः—वीसा। त्रिंशत्—तीसा। वक्ष्ये—वुच्छं। वच्मि—वेम्मि। बुद्धीए। धेणूए। नेपुरं। संगृह्णाति—संगिण्हइ। कृत्वा—कट्टु। नयनविहूनं मुहं। निवार्यते—नीवारइ। कुत्रापि गच्छति—कत्थवि गच्छइ।

## स्वरा रि च ऋवर्णस्य ॥ ८ ॥

ऋवर्णस्य स्थाने स्वरा भवन्ति, रि च भवति। धृतं—धतं। कृत्वा—कातूण। दृश्यते—दीसते। ऋषिः—इसि। पृथिवी—पुहवी। वृद्धः—वुड्ढो। वृंतं—वेंटं। उत्कृष्टं—उक्कोसं। ऋणं—रिणं।

## एर् ऐतः ॥ ९ ॥

ऐतः स्थाने ए भवति। वेतड्ढो। तेल्लं। सेंधवं। वेरं ॥

## अइ च ॥ १० ॥

ऐतः स्थाने अइ च भवति। ऐश्वर्य—अइसरियं। वैरं—वइरं ॥

## ओर् औतः ॥ ११ ॥

औतः स्थाने ओ भवति। ओसहं। सोवच्चलं ॥

## अउ च ॥ १२ ॥

औतः स्थाने अउ च भवति । सउरो । कउरवा । कउला । सौधं–सउहं । मौनं–मउणं । पौरुषं–पउरिसं ।

## एदोद्रलोपा विसर्जनीयस्य ॥ १३ ॥

एत्–ओत्–र–लोपा विसर्जनीयस्य स्थाने भवन्ति । कतरे गच्छति । दित्तरूपे । देवो । बंभणो । पुणरवि । स । एस । नई । बुद्धी । वहू ॥

## अदागमोऽनुस्वार–लोपौ च व्यञ्जनस्य ॥ १४ ॥

अकारागमोऽनुस्वार–लोपौ च व्यञ्जनस्य भवन्ति । अरहंतो । सरिताणं । पडिवयाणं । यत्–जं । तत्–तं । कम्मं । सम्यक्–सम्मं । ईषत्–ईसं । सीसं । नहं । सिराणं ॥

## द्वित्वं बहुत्वेन ॥ १५ ॥

द्विवचनं बहुवचनेन वाच्यम् । हत्था । पाया । देवा । बंभणा । णयणा सोहंते ॥

## षष्ठीवच्चतुर्थी ॥ १६ ॥

षष्ठीवच्चतुर्थी द्रष्टव्या । नमो जिणस्स । नमो गुरुणो ।

## प्रथमाया द्वितीया आर्षे ॥ १७ ॥

चतुर्विंशतिरपि जिनवराः–चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा मे पसीअंतु ॥

## सप्तम्यास्तृतीया आर्षे ॥ १८ ॥

तेणं कालेणं, तेणं समएणं–तस्मिन्काले, तस्मिन्समये ।

## न प्लुत–ङ–ञाः ॥ १९ ॥

प्लुता वर्णा ङकार–ञकारौ च प्राकृते न भवन्ति ।

## अनुस्वारो बहुलम् ॥ २० ॥

अनुस्वारस्य क्वचिल्लोपो भवति, क्वचिदागमः । क्वचित्प्रकृतिः । बंभणा । मंजरो । विंचुओ । चुंनी । काणं । काहं । नईहिं । सकतं । संगो । भंगो । दुद्धं । समिद्धं ॥

## गोर्गावि ॥ २१ ॥

गोशब्दस्य गावि इति भवति, निपातेन । गावी । गावीओ । गाविं । गावीए । गावीहिंतो । गावीणं । गावीसुं ।

## एवार्थे णइ–चेय–चियाः ॥ २२ ॥

एव शब्दार्थे णइ चेय चिय एते आदेशा भवन्ति । गत्या एव–गति णइ । मति णइ । तं चेय । सच्चिय ।

## अप्यस्योरत्लोपः ॥ २३ ॥

अपि असि एतयोरस्य लोपो भवति । सूरो पि । कतं पि । तं सि इह ।

## त्तु–त्ता–च्चा–ट्टु–त्तुं–त्तूण–ओ–प्पि पूर्व्वकालार्थे ॥ २४ ॥

एते पूर्वकालार्थे भवन्ति । वंदित्तु । वंदित्ता । सुच्चा । कट्टु । भोत्तुं । मोत्तूण । वंदिओ । एवं कप्पि ।

## मत्वर्थे आल–इल्लौ ॥ २५ ॥

मत्वर्थे एतौ प्रत्ययौ भवतः । जडालो । जडिल्लो । फडिल्लो ॥

## त्ता–ताव–जा–जावास्तावद्–यावतोः ॥ २६ ॥

तावच्छब्दस्य यावच्छब्दस्य च ता–तावौ जा–जावौ भवतः ।

ता वित्थिण्णं गयणं, तावच्चिय जलहिणोपि गंभीरा ॥
ता गरुआ सुरसेला, धीरेहि न जा तुलिज्जंते ॥ १ ॥

## उपमाने पिव–इव–विव–विय–व्व–व–जहाः ॥२७॥

उपमानार्थे वतः शब्दस्य एते आदेशा भवन्ति । चंदणं पिव । चमरमिव । कमलं विव तुज्झ मुहं । गिम्हो विय । सायरव्व । सेसस्स व एस फणो तुह । भाति जसो जहा संखो ॥

## ओत्वमवाऽपयोः ॥ २८ ॥

अव–अपयोः स्थाने ओ भवति । अवहसितं–ओहसितं । अपसरितं–ओसरितं । अपवरकः–ओवरओ ॥

## खलोः खु ॥ २९ ॥

खलुशब्दस्य खु आदेशो भवति। एवं खु जंतपीलणं।

## तो वर्तमानार्थे ॥ ३० ॥

यो वर्तमानकालाऽर्थे आन प्रत्ययस्तस्यार्थे तकारो भवति। भिद्यमानं–भिज्जंतं। कथ्यमानं–कथिज्जंतं। साध्यमानं–साहिज्जंतं ॥

## भे सर्वासु युष्मदः ॥ ३१ ॥

युष्मच्छब्दस्य सर्वासु विभक्तिषु भे भवति। भे निसामेथ ( यूयं निशाम्यत )। भे भणामि ( युष्मान् भणामि )। भे कतं ( त्वया कृतं ) ॥

## अस्मदोऽपि ॥ ३२ ॥

अस्मच्छब्दस्याऽपि सर्वासु विभक्तिषु भे भवति। नेहेन भणामो भे तुब्भे ( वयं युष्मान् स्नेहेन भणाम इत्यर्थः )

## इतेरियः ॥ ३३ ॥

इति शब्दस्य इय आदेशो भवति। इय एवं।

## भावे त्तणः ॥ ३४ ॥

भावार्थे त्तणः प्रत्ययो भवति। गामत्तणं। नयरत्तणं ॥

इति चण्डकृते प्राकृतलक्षणे

स्वरविधानं द्वितीयं समाप्तम् ॥

---

# अथ ३ व्यञ्जनविधानमाह—

## हाद् य–वौ लोप्यौ ॥ १ ॥

हात् हकारात् यकार–वकारौ परत्र अवस्थितौ लोप्यौ भवतः। मुह्यते–मुज्झते। दह्यते–डज्झते। विह्वलः–विब्भलो। जिह्वा–जिब्भा।

## स–व–लेभ्यो व्यञ्जनम् ॥ २ ॥

स–व–लेभ्यः परं व्यञ्जनं लोप्यं भवति। स्वयं–सयं। स्वर्गं–सग्गं। श्रोतव्यं–सोतव्वं। काव्यं–कव्वं। शल्यं–सल्लं। बिल्वं–बिल्लं। शस्यं–सस्सं। श्रुतं–सुतं। श्लेष्मा–सिब्भा।

## वर्गे ॥ ३ ॥

वर्गे च परे तल्लोप्यं भवति। शक्तः–सत्तो। रक्तं–रत्तं। दुग्धं–दुद्धं। वच्मि–वेम्मि। षट्कं–छक्कं। षट्पदः–छप्पओ। खड्गं–खग्गं। षण्मुखः–छम्मुहो। आत्मा–अप्पा। उत्पलं–उप्पलं। सद्भावं–सब्भावं। मन्मथः–वम्मथो। प्राप्तं–पत्तं। प्रद्युम्नः–पज्जुन्नो। अर्कः–अक्को। उल्का–उक्का। भास्करः–भक्खरो। ब्रह्मा–बम्हा।

## शे वर्गाद्यं ॥ ४ ॥

वर्गाद्यं शे परे लोप्यं भवति। वृक्षः–वच्छो। क्षमा–खमा। संवत्सरः–संवच्छरो। मत्सरः–मच्छरो। अप्सरा–अच्छरा। ईप्सितं–इच्छितं ॥

## वर्गादवर्ग्यम् ॥ ५ ॥

वर्गात् परमवर्ग्यं व्यञ्जनं लोप्यं भवति। सौख्यं–सुक्खं। शक्रः–सक्को। क्लीबः–कीवो। विध्वंसितं–विद्धंसितं। ऊर्ध्वं–उद्धं। प्राप्तं–पत्तं।

## शाच्च पंचमो वा ॥ ६ ॥

वर्गपरः शपरश्च वर्गपञ्चमो वा लोप्यो भवति। ज्ञानं–नाणं। यत्नं–जत्तं। लक्ष्मणः–लक्खणो। लक्ष्मी–लच्छी। तीक्ष्णं–तिक्खं। आत्मा–अप्पा।

## दो वे ॥ ७ ॥

दकारो वकारे परे लोप्यो वा भवति। द्वारं–वारं। वेति किं? दारं।

## षाट्टः ॥ ८ ॥

षकारात्परष्टकारो वा लोप्यो भवति। उत्कृष्टं–उक्कोसं, उक्किट्ठं। स्पष्टं–फुडं, पुट्ठं।

## रेफः पूर्वश्च ॥ ९ ॥

सर्वस्माद् व्यञ्जनात् परः पूर्वस्थश्च रेफो लोप्यो भवति। तक्रं–तक्कं। अर्कः–अक्को। मूर्खः–मुक्खो। न्यग्रोधः–निग्गोहो। स्वर्गं–सग्गं। शीघ्रः–सिग्घो। अर्घः–अग्घो। अर्चनं–अच्चणं। वज्रं–वज्जं। दुर्जनः–दुज्जणो। उष्ट्रः–उट्टो। सुवर्णं–सुवण्णं। शत्रुः–सत्तू। कर्तव्यं–कातव्वं। कर्दमं–कद्दमं। ऊर्ध्वं–उद्धं। प्रवरः–पवरो। भ्रमरः–भवरो, भमरो, भसलो। धर्मः–धम्मो। सूर्यः–सुज्जो। व्रतं–वतं। पर्वतः–पव्वतो। श्रुतं–सुतं। ह्रस्वः–हस्सो।

## असंयोगस्य ॥ १० ॥

अत ऊर्ध्वं ये व्यञ्जनाऽऽदेशास्ते असंयोगस्य भवन्ति । गृहं–घरं । स्तम्भः–खंभो ।

## प्रथम–द्वितीययोर्द्वितीय–चतुर्थौ ॥ ११ ॥

वर्गाणां प्रथम–द्वितीययोः स्थाने यथासंख्यं द्वितीय–चतुर्थौ आदेशौ भवतः । भास्करः–भक्खरो । निश्चयः–निच्छओ । दुष्टं–दुट्ठं । स्तंभः–थंभो । परुषं–फरुसं । विद्यते–विज्झते । दंष्ट्रा–दाढा । मथुरा–मधुरा । नाथः–नाधो ।

## प्रथमस्य तृतीयः ॥ १२ ॥

प्रथमस्य स्थाने तृतीयो भवति । एकं–एगं । तीर्थंकरः–तित्थगरो । पिशाची–पिशाजी । जटा–जडा । कृतं–कदं । प्रतिषिद्धं–पडिसिद्धं ।

## हो ख–घ–ध–भानाम् ॥ १३ ॥

खकार–घकार–धकार–भकाराणां स्थाने हकारो भवति । मुखं–मुहं । मेघः–मेहो । मघवः–महवो । वृषभः–वसहो ।

## सस्य ख–छ–हाः ॥ १४ ॥

सकारस्य स्थाने ख–छ–हा भवन्ति । भिक्षा–भिक्खा । षण्मुखः–छम्मुहो । पाषाणः–पाहाणो । दश–दह ।

## यस्य जः ॥ १५ ॥

यकारस्य स्थाने जकारो भवति । यौवनं–जुव्वणं । सूर्य्यः–सुज्जो । यात्रा–जत्ता ।

## प–वयोर्मो वा ॥ १६ ॥

पकार–वकारयोः स्थाने मकारो वा भवति। शबरः–सवरो, समरो। स्वप्नः–सिविणो, सिमिणो। नीवी–णीमी। पूर्वः–पुव्वो, पुरिमो ॥

## तवर्गस्य च–टवर्गौ ॥ १७ ॥

तवर्गस्य स्थाने च–टवर्गौ भवतः, यथासंख्यम्। नित्यं–णिच्चं। पथ्यं–पच्छं। विद्या–विज्जा। वंध्या–वंझा। नृत्यं–णट्टं। स्थितः–ठिओ। दंडः–डंडो। दग्धः–दड्ढो। धान्यं–धण्णं। वर्धमानः–वड्ढमाणो। वृद्धः–वुड्ढो। खिद्यते–खिज्जए। रुदितं–रुण्णं।

## युष्मदो यस्य तः ॥ १८ ॥

युष्मत्संबन्धिनो यकारस्य तकारो भवति। तुम्हेहि।

## जस्य रः ॥ १९ ॥

जकारस्य स्थाने रकारो भवति। व्युत्सृजामि–वोसरामि। व्युत्सृजति–वोसरइ। यष्टिः–लट्ठी। यष्टिका–लट्ठिआ।

## र–श–षाणां सः ॥ २० ॥

रेफ–शकार–षकाराणां स्थाने सकारो भवति। शिरः–सीसं। शशी–ससी। आमिषं–आमिसं।

## ह–ज–थानां र–न–खाः ॥ २१ ॥

ह–ज–थानां स्थाने र–न–खा भवन्ति, यथासंख्यम्।

गृहं–घरं । ज्ञानं–नाणं । राज्ञा–राणा । आज्ञा–आणा । स्तंभः–खंभो ।

## ग–र–ह्याणां घ–ण–ज्झाः ॥ २२ ॥

ग–र–ह्याणां स्थाने घ–ण–ज्झा भवन्ति, यथासंख्यम् । गृहं–घरं । करवीरः–कणवीरो । वाह्यः–वज्झो ।

## म–ड–ह्वानां व–ल–भाः ॥ २३ ॥

म–ड–ह्वानां स्थाने यथाक्रमं व–ल–भा भवन्ति । मन्मथः–वम्मथो । षोडश–सोलस । जिह्वा–जिब्भा ।

## य–वयोर्व्यत्यासः ॥ २४ ॥

यकार–वकारयोर्व्यत्यासो भवति । पर्य्यंकः–पल्लंको । वैदूर्यः–वेदुलिओ । त्रयोदश–तेरह । वृक्षः–रुक्खो ।

## श–ह्योर्लोपे न–ण–मानामधो होऽपदादौ स्थितानाम् ॥ २५ ॥

न–ण–मानां सम्बन्धिनौ यौ श–हौ तयोर्लोपे हकाराऽऽगमो भवति । अधः पदादावस्थितानाम् । प्रश्नः–पण्हो । तृष्णा–तण्हा । यस्मात्–जम्हा । गृह्णाति–गिण्हति । वह्नि–वण्ही । जिह्मः–जिम्हो । अपदादाविति किं ? श्मशानम्–मसानं ।

## लोपे द्वित्वम् ॥ २६ ॥

संयोगाक्षरस्य लोपेऽवशेषस्य द्वित्वं भवति । दुर्गा–दुग्गा । शक्रः–सक्को । तस्करः–तक्करो । व्याघ्रः–वग्घो ।

## क्वचिद्लोपेऽपि ॥ २७ ॥

क्वचिदलोपेऽपि द्वित्वं भवति। न ज्ञायते–न नज्जते। व्याध्यते–वाहिज्जते।

## तस्मिन् द्वितीय–चतुर्थयोः प्रथम–तृतीयौ ॥ २८ ॥

तस्मिन् द्वित्वे वर्तमानयोर्द्वितीय–चतुर्थयोः स्थाने प्रथम–तृतीयौ भवतः। सौख्यं–सुक्खं। अर्घः–अग्घो। पथ्यं–पच्छं। साध्यः–सज्झो। षष्ठः–छट्ठो। वृद्धः–वुड्ढो। पार्थः–पत्थो। वर्धमानः–वद्धमाणो। पुष्पं–पुप्फं। जिह्वा–जिब्भा।

## स एवाऽन्येषाम् ॥ २९ ॥

अन्येषामुक्तविशेषाणां द्वित्वे स एव भवति। अर्कः–अक्को। सत्यं–सच्चं। भुक्तं–भुत्तं। धान्यं–धण्णं। सर्पः–सप्पो। शुल्वं–सुल्लं। काव्यं–कव्वं। शस्यं–सस्सं॥

## न पदादौ ॥ ३० ॥

पदादौ द्वित्वं न भवति। क्रोधः–कोहो। क्षुद्रः–खुद्दो। पदादाविति किं? भद्रः–भद्दो।

## क्वचिदन्यत्राऽपि ॥ ३१ ॥

क्वचित् पदमध्येऽवसाने च लोपे कृते द्वित्वं न भवति। काश्यपः–कासवो। वैश्रवणः–वेसवणो। स्पष्टं–फुडं। कर्तव्यं–कातव्वं। शीर्षः–सीसो। दीर्घः–दीहो। उत्कृष्टं–उक्कोसं।

## संयोगस्येष्टस्वराऽऽगमो मध्ये ॥ ३२ ॥

द्वयोर्व्यञ्जनयोर्मध्ये इष्टस्वरागमो भवति। अग्निः–अगणी। विश्लेषः–विसलेसो। प्लक्षः–पलक्खो। रत्नं–रतनं। वर्षं–वरिसं। सूर्यः–सूरिओ। सर्षपः–सरिसवो। वैदुर्यः–वेदुलिओ। क्षमा–खमा। सूक्ष्मं–सुहुमं। पद्मं–पदुमं।

## य–वयोरिदुतौ ॥ ३३ ॥

य–वयोः स्थाने इकारोकारौ भवतः। त्रयोदश–तेरह। भवति–होति।

## संख्यायास्ति–शयोर्लोपः ॥ ३४ ॥

संख्यासम्बन्धिनोः ति–शयोर्लोपो भवति। विंशतिः–वीसा। पञ्चाशत्–पन्ना।

## तस्य च ॥ ३५ ॥

संख्यासंबन्धिनस्तकारस्य च लोपो भवति। पञ्चपञ्चाशत्–पणपण्णसं।

## क–तृतीययोः स्वरे ॥ ३६ ॥

ककारस्य वर्गतृतीयस्य च स्वरे परे लोपो भवति। कोकिलः–कोइलो। भौगिकः–भोइओ। राजी–राई। नदी–नई।

## यत्वमवर्णे ॥ ३७ ॥

ककार–वर्गतृतीययोरवर्णे परे यत्वं भवति। काकाः–काया। नागाः–नाया।

## शिष्टप्रयोगाद् व्यवस्था ॥ ३८ ॥

व्यवस्था वर्णाऽवस्थानं शिष्टप्रयोगात् ज्ञातव्या । अर्कः-अक्को । सूर्यः-सूरिओ । भिक्षा-भिक्खा । लक्ष्मी-लच्छी ।

## न लोपोऽपभ्रंशेऽधो रेफस्य ॥ ३९ ॥

अपभ्रंशेऽधो रेफस्य लोपो न भवति । वरत्तु ग्रामो वाघ्रो ग्रसि जादि ।

## पैशाचिक्यां र-णयोर्ल-नौ ॥ ४० ॥

पैशाचिक्यां रेफस्य लकारो भवति, णकारस्य नकारः । अले अले दुट्ठलक्खसा पनमत पनइङ्कितासा ।

## मागधिकायां र-सयोर्ल-शौ ॥ ४१ ॥

मागधिकायां रेफ-सकारयोः ल-शौ भवतः । चन्दकल-निकलं हवति । शेशे । हंशे । पशुत्ते ।

इति श्रीचण्डकृते प्राकृतलक्षणे

॥ व्यञ्जनविधानं तृतीयं समाप्तम् ॥

इति प्राकृतलक्षणं संपूर्णम् ।





# कहासंगहो।

## सिरिथूलभद्दचरियं.

पुव्विं खिइप्पइट्ठियं णाम नयरं। तत्थ वत्थुंमि खीणे चणगपुरं णिविट्ठं, ततो उसहपुरं, ततो रायगिहं, ततो चंपा, ततो पाडलिपुत्तं इच्चाइ भाणियव्वं, जाव सगडाले पंचत्तमुवगते णंदेण सिरितो भणितो—कुमारामच्चत्तणं पडिवज्जाहि। सो भणइ—मम भाया जेट्ठो थूलभद्दो बारसमं वरिसं गणियाघरं पविट्ठस्स। सो सद्दावितो भणइ—चिंतेमि। राया भणइ—असोगवणियाए चिंतेहि, सो तत्थ अतिगतो चिंतेति—केरिसं भोगकज्जं वक्खित्ताणं? पुणरवि णरगं जातियव्वं होहित्ति, एए णाम परिणामदुस्सहा भोगत्ति पंचमुट्ठियं लोयं काऊण, पाउयं कंबलरयणं छिंदित्ता, रओहरणं काउं रण्णो मूलं गतो,

४

एयं चिंतियं । राया भणइ–सुचिंतियं, विणिग्गतो, राया चिंतेइ–पिच्छामि किं कवडत्तणेण गणियाघरं पविस्सइ, ण वत्ति? पासायतलगओ पेच्छइ, नवरं मयगकलेवरस्स जणो ओसरइ, मुहाणि य ठएइ, सो मज्झेण गतो, राया भणइ–णिविण्णकामभोगो भगवंति सिरिओ ठावितो । सो संभूयगविजयस्स मूले पव्वतितो, थूलभद्दसामीवि संभूयविजयाणं मूले घोरागारं तवं करेइ ।

विहरंता पाडलिपुत्तं आगया तिण्णिअणगारा अभिग्गहे गिण्हंति–एक्को सीहगुहाए, तं पेहंतओ सीहो उवसंतो, अन्नो सप्पगुहाए, सोऽवि दिट्ठीविसो उवसंतो, थूलभद्दो कोसाघरे, सा तुट्ठा, परीसहपराजिओ आगओत्ति, भणइ–किं करेमि? उज्जाणघरे ठाणं देहि, दिन्नं, रत्तिं सव्वालङ्कारविभूसिया आगया, चाडुयं पकया, सो मंदरोपमो अकंपो, ताहे सब्भावेण पडिसुणेइ, धम्मो कहितो, साविगा जाया, भणाति–जतिरायवसेणं अन्नेणं समं वसेज्जा, इयरहा वंभचारिणिवियं गिण्हाति ।

ताहे सीहगुहाओ आगओ चत्तारि मासे उववासं काऊणं, आइरिएहिं ईसत्ति अब्भुट्ठिओ, भणिओ य–सागयं दुक्करकारगस्सत्ति । एवं सप्पईत्तोऽवि । थूलभद्दसामी तत्थेव गणियाघरे भिक्खं गिण्हइ, सोऽवि चउमासेसु पुण्णेसु आगतो, आयरिया संभमेण उट्ठिया, भणिओ य–सागयं ते अइदुक्करदुक्करकारगस्सत्ति ।

ते भणंति दोण्णिवि-पेच्छह आयरिया रागं वहति अमच्चपुत्तोत्ति, वितियए वरिसारत्ते सीहगुहाखमणो भणाति–गणियाघरं वच्चामित्ति अभिग्गहं गिण्हइ, आयरिया उवउत्ता,

वारिओ, अप्पडिसुणंतो गतो, वसही मग्गिया, दिण्णा, सा सब्भावेण ओरालियसरीरा विभूसिया अविभूसिया वा, सुणाति धम्मं, सो तीसे सरीरे अज्झोववन्नो, ओभासइ, सा ण इच्छति, भणति—जति नवरि किंचि देसि, किं देमि ? सयसहस्सं, सो मग्गिउ मारद्धो, णेवालविसये सावतो, जो तहिं जाइ तस्स सयसहस्समुल्लं कंबलं देइ, तहिं गतो, तेण दिण्णं सड्ढरायाणएणात्ति । एगत्थ चोरेहिं पंथो बद्धो, सउणो वासति—सयसहस्संति, चोरसेणावई जाणइ, नवरि संजयं पेच्छइ, वोलीणो, पुणो वासति—सयसहस्सं गतं तेण सेणा-वइणा गंतूण पलोइओ, सब्भावं पुच्छिओ भणाति—अत्थि कंबलो, गणिकाए णेमि, मुक्को गतो, तीसे दिण्णो, ताए चंदणिकाए छूढो, सो भणइ—मा विणासेहि, सा भणइ—तुमं पि एरिसओ चेव होहिसि, उवसामेति लद्धबुद्धी, इच्छामि अणुसट्ठिं, गतो, पुणो आलोएत्ता विहरइ ।

आयरिएणं भणिओ—एवं दुक्करदुक्करकारओ थूलभद्दो पुव्विं खरिका ( दुअक्खरिया ) इच्छइ, इदाणीं सड्ढी जाया, अदिट्ठदोसा तुमे पत्थियात्ति उवालद्धो, एवं चेव विहरंति ।



## दंडगारण्णस्स उप्पत्ति.



सावत्थीए नयरीए जियसत्तू राया, धारिणी देवी, तीसे पुत्तो खंदओ णाम कुमारो, तस्स भगिणी पुरंदरजसा, सा कुंभकारकडे नयरे दंडगी नाम राया तस्स दिन्ना, तस्स य दंडकिस्स रण्णो पालगो णाम मरुतो पुरोहितो। अन्नया सावत्थीए मुणिसुव्वयसामी तित्थयरो समोसरिओ, परिसानिग्गया खंदतोऽवि निग्गतो, धम्मं सोच्चा सावगो जाओ। अन्नया सो पालकमरुतो दूयत्ताए आगतो सावत्थिं नयरिं, अत्थाणिमज्झे साहूणं अवण्णं वयमाणो खंदएणं निप्पिट्ठपसिणवागरणो कतो, पतोसमावण्णो, तप्पभिइं चेव खंदगस्स छिद्दाणि चारपुरिसेहिं मग्गावितो विहरइ, जाव खंदगो पंचजणसएहिं कुमारोलग्गएहिं सद्धिं मुणिसुव्वयसामिसगासे पव्वतितो, बहुसुतो जातो, ताणि चेव से पंच सयाणि सीसत्ताए अणुण्णायाणि। अन्नया खंदओ सामिमापुच्छइ—वच्चामि भगिणीसगासं, सामिणा भणियं—उवसग्गो मारणंतितो। भणइ—आराहगा विराहगा वा?, सामिणा भणियं—सव्वे आराहगा, तुमं मोत्तुं। सो भणइ—लट्ठं, जदि एत्तिया आराहगा, गओ कुम्भकारकडं। मरूएण जहिं उज्जाणे ठिओ तहिं आउहाणि णूमियाणि, राया वुग्गाहिओ—जहा एस कुमारो परीसहपराइतो एएण उवाएण तुमं मारित्ता रज्जं गिण्हिहहत्ति, जदि ते विपच्चतो उज्जाणं पलोएहि, आउहाणि

ओलइयाणि दिट्ठाणि, ते बंधिऊण तस्स चेव पुरोहियस्स समप्पिया, तेण सव्वे पुरिसजंतेण पीलिया, तेहिं सम्मं अहियासियं, तेसिं केवलणाणं उप्पण्णं, सिद्धा य। खंदतोऽवि पासे धरिओ, लोहियचिरिक्काहिं भरिज्जंतो सव्वतो पच्छा जंते पीलितो णिदाणं काऊण अग्गिकुमारेसु उववण्णो।

तंपि से रयहरणं रुहिरलित्तं पुरिसहत्थोत्ति काउं गिद्धेहिं पुरंदरजसांते पुरतो पाडियं, सावि तद्दिवसं अधितिं करेइ जहा साधू ण दीसंति, तं च णाए दिट्ठं, पच्चभिन्नाओ य कंबलो, णिसिज्जातो छिण्णातो, ताए चेव दिण्णो, ताए नायं–जहा ते मारिया। ताए खिंसितो राया–पाव? विणट्ठोऽसि। ताए चिंतियं–पव्वयामि, देवेहिं मुणिसुव्वयसगासं नीया।

तेण वि देवेणणगरं दड्ढं सजणव्वयं, अज्जवि "दंडगारण्णं" ति भण्णइ।



# बोडियमयस्स समुप्पत्ती.

छव्वाससएहिं णवोत्तरेहिं सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।
तो बोडियाण दिट्ठी रहवीरपुरे समुप्पन्ना ॥ १ ॥

तेणं कालेणं तेणं समयेणं रहवीरपुरं कब्बडं, तत्थ दीवगं णाम उज्जाणं, तत्थ अज्जकण्हा आयरिया समोसढा । तत्थ एगो सिवभूई णाम साहस्सिमल्लो, सो रायाणं उवगतो, तुमं ओलग्गामित्ति, जा परिक्खामित्ति, रायाए अन्नया भणितो वच्च माइघरे सुसाणे किण्हचउद्दसीए बलिं देहि, सुरा पसुतो दिन्नो अन्ने य पुरिसा भणिया—एयं बीहाविज्जाह, सो गंतूण माइबलिं दाऊण छुहिओमित्ति तत्थेव सुसाणे तं पसुं पओलित्ता खाइ, ते य गोहा सिवारसिएहिं समंता भेरवं रवं करेंति, तस्स रोमुब्भेओऽवि न कज्जइ, तओ अब्भुट्ठिओ गतो, तेहिं सिट्ठं वित्ती दिन्ना । अन्नया सो राया दंडे आणवेति—जहा महुरं गेण्हह, ते सव्वबलेणं उद्धाइया, ततो अदूरसामंतेणं गंतूण भणंति—अम्हे ण पुच्छियं कयरं महुरं वच्चामो, ? राया य अविण्णवणिज्जो, ते गुंगुयंता अच्छंति, सिवभूई आगतो भणति—किं भो ! अच्छह ?, तेहिं सिट्ठं, तो भणति—दोऽवि गिण्हामो समं चेव, ते भणंति—ण सक्का, दो भागिएहिं एक्केक्काए बहूकालो होतित्ति, सो भणति—जं दुज्जयं तं मम देह, भणितो जाणिज्जाइ, भणइ—

(सूरे त्यागिनि विदुषि च, वसति जनः स च जनाद्गुणी भवति। गुणवति धनं धनाच्छ्रीः, श्रीमत्याज्ञा ततो राज्यम् ॥१॥)

एवं भणित्ता पहावितो पंडुमहुरंतेणं, तत्थ पच्चंताणि ताविउमारद्धो, दुग्गे ठितो, एवं ताव जाव णगरसेसं जायं, पच्छा णगरमवि गहियं ओवइत्ता, ततो णिवेइयं तेण रण्णो, तुट्ठेण भणियं–किं देमि ?, सो चिंतियं भणति–जं मए गहियं तं सुगहियं, जहिच्छतो भविस्सामि, एवं होउत्ति। एवं सो य बाहिं चेव हिंडंतो अड्ढरत्ते आगच्छति वा ण वा, तस्स भज्जा ताव ण जेमेइ सुयति वा जाव णागतो भवति, सावि णिव्विण्णा। अन्नया मायरं सा वड्ढेति–तुम्ह पुत्तो दिवसे दिवसे अड्ढरत्ते एति, अहं जग्गामि, छुहातिया अच्छामि, ताहे ताए भणइ–मा दारं देज्जाहि, अहं अज्ज जग्गामि, सो दारं मग्गति, इयरीय अंबाडितो, भणितो य–जत्थ इमाए वेलाए उग्घाडियाणि तत्थ वच्च। तस्स भवियव्वयाए तेण मग्गंतेण उग्घाडितो साहुपडिस्सतो दिट्ठो, तत्थ गतो, वंदति, भणइ–पव्वावेह मए, नेच्छंति, सयं लोओ कतो, ताहे से लिंगं दिन्नं, ते विहरिया। पुणोऽवि आगयाणं रण्णा कंबलरयणं से दिन्नं। आयरिएण–किं एएण जईणं ?, किं गहियंति भणिऊण तस्स अणापुच्छाए फालियं, णिसेज्जातो कयातो, ततो स कसाइतो। अण्णया जिणकप्पिया वणिज्जंति। जहा–

जिणकप्पिया य दुविहा पाणिपाया पडिग्गहधरा य।

पाउरणम–पाउरणा एक्केका ते भवे दुविहा ॥ १ ॥
( इत्यादि ),

सो भणइ–किं एस एवं ण कीरइ ?, तेहिं भणियं–एस वोच्छिन्नो, ममं ण वोच्छिज्जइत्ति सो चेव परलोगत्थिणा कायव्वो ॥ कम्मोदयेण चीवराइयं छड्डेत्ता गतो ॥

तस्स उत्तरा भइणी उज्जाणे ठियस्स वंदिया गया, तं च दट्ठुण तीएवि चीवरातियं सव्वं छड्डियं ताहे भिक्खाए पविट्ठा, गणियाए दिट्ठा, मा अम्ह लोगो विरज्जिहित्ति उरे से पोत्ती बद्धा सा णेच्छति, तेण भणियं अच्छउ एसा तव देवयादिन्ना ।

तेण य दो सीसा पव्वाविया–कोडिण्णो कोट्टवीरो य, तओ सीसाण परंपरफासो जातो ॥



# मल्लकहाणगं.

उज्जेणी नयरी, जियसत्तू राया, तस्स अट्टणो मल्लो, सव्वरज्जेसु अजेतो । इतो य समुद्दतडे सोपारयं णयरं, तत्थ सिंहगिरी राया, सो य मल्लाणं जो जिणति तस्स बहुं दव्वं देति, सो य अट्टणो तत्थ गंतूण वरिसे वरिसे पडागं हरति, राया चिंतेइ–एस अन्नाओ रज्जाओ आगंतूण पडागं हरति, एसा ममं ओहावणत्ति पडिमल्लं मग्गति, तेण मच्छितो एगो दिट्ठो वसं पियंतो, बलं च से विन्नासियं, णाऊण पोसितो, पुणरवि अट्टणो आगतो, सो य किर मल्लजुद्धं होहितित्ति अणागते चेव सगातो णयरातो अप्पणो पत्थयणस्स वयल्लं भरेऊणं अव्वाबाहेणं एति, संपत्तो सोपारयं, जुद्धे पराजिओ मच्छियमल्लेणं, गतो सयं आवासं चिंतेइ–एयस्स बुड्ढी तरुणस्स मम हाणी, अन्नं मग्गइ मल्लं सुणेति सुरट्ठाए अत्थित्ति, एतेणं भरुकच्छ हरणीगामे दूरेल्लकूवियाए करिसतो दिट्ठो, एक्केणं हत्थेणं हलं वाहेइ, एक्केणं फलहितो उप्पाडेति, तं दट्ठुण ठितो, पेच्छामि ताव से आहारेति, आवल्ला मुक्का, भज्जा य से भत्तं गहाय आगया, पत्थिया, कूरस्स उब्भज्जिय घडतो पेच्छति, जिमितो सण्णाभूमिं गतो, तत्थ परिक्खइ सव्वं संवट्टिं, स वेयालियंमि वसहिं तस्स घरे मग्गति, दिन्ना । इतो य संकहा य. पुच्छइ–का जीविका ? तेण कहिए भणति–अहं अट्टणो तुमं इस्सरं करेमित्ति, तीसे

महिलाए कप्पासमोल्लं दिण्णं, सा य उवत्तेद्धा, उज्जेणिए गया तेणावि वमणविरेयणाणि कयाणि, पोसितो णिजुद्धं सिक्खावितो, पुणरवि महिमाकाले तेणेव विहिणा आगतो, पढम दिवसे फलहियमल्लो, मच्छियमल्लोवि, जुद्धे एक्को अजितो एक्को अपराजितो, रायावि बीयदिवसे होहिइत्ति अतिगतो, इमेवि सए सए आलए गया, अट्टणेण फलहियमल्लो भणितो कहेहि पुत्ता ! जं ते दुक्खावियं, तेण कहियं, मक्खित्ता मलितो से एणं पुणण्णवीकतो, मच्छियस्सवि रण्णा संमद्दगा विसज्जिया, भणइ-अहं तस्स पिउणोऽपि ण बीहेमि, सो को वराओ ? बीयदिवसे समजुद्धा, तईयदिवसे अंबप्पहारो णीसहो वइसाहं ठितो मच्छितो। अट्टणेण भणितो-फलहित्ति तेण फलिहग्गहेण कड्डितो सीसे कुंडिकागाहेण, सक्कारितो, गतो उज्जेणीं। तत्थय विमुक्कजुज्झवावारो अच्छति, सो य महल्लोत्तिकाउं परिभूयए सयण वग्गेणं जहा अयं संपयं ण कस्सइ कज्जस्स खमोत्ति, पच्छा सो माणेणं तेसिं अणाउच्छाए कोसंबिए णयरिए गतो, तत्थ वरसमेत्तं उवरंगमतिगतो रसायणं उवजीवेति, सो बलिट्ठो जातो, जुद्धमहे पवत्तेति, रायमल्लो णिरंगणो णाम तं णिहणति, पच्छा राया मण्णुइतो-मम मल्लो आगंतूणा विहणितोत्ति ण पसंसई रायाणे य अपसंसंते सव्वो रंगो तुण्हिक्को अच्छति,

इतो य अट्टणेण राइणो जाणणणिमित्तं भणाति-

साहह वण ! सउणाणं साहह भो सउणिगा ? सउणिगाणं।

णिहतो णिरंगणो अट्टणेण णिक्खित्त सत्थेणं ॥ १ ॥

एवं भणियमेत्ते राइणा एस अट्टणोत्तिकाउं तुट्ठेण

पूजितो, दव्वं च से पज्जत्तियं आमरणंतियं दिण्णं, सयणवग्गो य से तं सोउं तस्स सगासमुवगतो, पायवडणमाईहिं पत्तियावेउं दव्वलोभेणं अल्लियावितो, पच्छा सो चिंतेइ—ममं एते दव्वलोभेण अल्लियावेंति पुणोऽवि मम परिभविस्संतित्ति, जरापरिगतो अहं ण पुणो सुम हल्लेणावि पयत्तेण सक्किस्सं जुवत्तं काउं। तं जावऽज्जवि सचेट्ठो ताव पव्वयामित्ति संपहारेउं पव्वतितो ॥



# वाणियगपुत्तकहा,

जहा एगस्स वाणियगस्स तिन्नि पुत्ता, तेण तेसिं सहस्सं सहस्सं दिन्नं काहावणाणं, भणिया य–एएण ववहरिऊण एत्तिएण कालेण एज्जाह । ते तं मूलं घेत्तण णिग्गया सणगरातो, पिधप्पिधेसु पट्टणेसु ठिया ।

तत्थेगो भोयणच्छायणवज्जं जूयमज्जमंसवेसावसणविरहितो विहीए ववहरमाणो विपुललाभसमन्नितो जातो ।

बितितो पुण मूलमवि दव्वंतो लाभगं भोयणाच्छायणमल्लालंकारादिसु उवभुंजति, ण य अच्चादरेण ववहरति ।

ततितो न किंचि संववहरति, केवलं जूयमज्जमंसवेसगंधमल्लतंबोलसरीरकिरियासु अप्पेणेव कालेण तं दव्वं णिट्ठवियंति । जहावहिकालस्स सपुरमागया ।

तत्थ जो छिन्नमूलो सो सवस्स असामी जातो, पेसए उवचरिज्जति, बितितो घरवावारे णिवुत्तो भत्तपाणसंतुट्ठो ण दायव्वभोत्तव्वेसु ववसायति, ततितो घरवित्थरस्स सामी जातो ।

केति पुण कहंति–तिन्नि वाणियगा पत्तेयं पत्तेयं ववहरंति, तत्थेगो छिन्नमूलो पेसत्तमुवगतो, केण वा संववहारं करेउ ? अच्छिन्नमूलो पुणरवि वाणिज्जाए भवति, इयरो बंधुसहितो मोदए । एस दिट्ठंतो ।



# अभयकुमारस्स पव्वज्जा.

रायगिहे णगरे सेणिओ राया, चेल्लणा तस्स भज्जा, सा वद्धमाणसामिमपच्छिमतित्थगरं वंदित्ता वेयालियं माह-मासे पविसति, पच्छा साहू दिट्ठो पडिमापडिवण्णओ, तीए रत्तिं सुत्तिआए हत्थो किहवि विलंबिओ, जया सीतेण गहिओ तदा चेतितं, पवेसितो हत्थो, तस्स हत्थस्स तणएणं सव्वं सरीरं सीतेण गहिअं।

तीए भणिअं–स तवस्सी किं करिस्सति संपयं ?।

पच्छा सेणिएण चिंतियं–संगारदिण्णओ से कोई।

रुट्ठेण कल्लं अभओ भणिओ–सिग्घं अंतेउरं पलीवेहि। सेणिओ गतो सामिसगासं।

अभयेण हत्थिसाला पलीविया।

सेणिओ सामिं पुच्छति -चेल्लणा ;किं एगपत्ती अणेगपत्ती ?, सामिणा भणिअं–एगपत्ती, ताहे मा डज्झिहितित्ति तुरितं णिग्गओ, अभओ णिप्फिडति।

सेणिएणं भणिअं पलीवितं ? सो भणति–आमं, तुमं किं ण पविट्ठो ?, भणाति अहं पव्वइस्सामि किं मे अग्गिणा ?।

पच्छा णेण चिंतिअं–मा छड्डिज्जिहितित्ति भणितं–ण डज्झति।

# मुग्गसेल–मेहसंवादो.

चरियं च कप्पितं वा आहरणं दुविहमेव नायव्वं।
अत्थस्स साहणट्ठा इंधणमिव ओदणट्ठाए॥ १ ॥

तत्थ इमं कप्पिअं, जहा–

मुग्गसेलो पुक्खलसंवट्टओ अ महामेहो जंबूदीवप्पमाणो।

तत्थ णारयत्थाणीओ कलहं आलाएति। मुग्गसेलं भणति–"तुज्झ नामग्गहणे कए पुक्खलसंवट्टओ भणति–जहा णं एगाए धाराए विराएमि,"।

सेलो उप्पासितो भणति–"जदि मे तिलतुसतिभागंपि उल्लेति तो णामं ण वहामि"।

पच्छा मेहस्स मूले भणति–मुग्गसेलवयणाइं।

सो रुट्ठो, सव्वादरेण वरिसिउमारद्धो जुगप्पहाणाहि धाराहिं सत्तरत्ते वुट्ठे चिंतेति–विराओ होहित्ति ठिओ।

पाणिए ओसरिए इतरो मिसिमिसिंतो उज्जलतरो जातो भणति–जोहारोत्ति। ताहे मेहो लज्जितो गतो॥

एवं चेव कोइ सीसो मुग्गसेलसमाणो एगमवि पदं ण लग्गति, अण्णो आयरिओ गज्जंतो आगतो, अहं णं गाहेमित्ति।

(आह–आचार्यस्यैव तज्जाड्यं, यच्छिष्यो नावबुध्यते
गावो गोपालकेनेव, कुतीर्थेनावतारिताः ॥१॥)

ताहे पढावेउमारद्धो ण सक्किओ, लज्जिओ गओ।

# भरह-बाहुबलिजुद्धम्.



कुमारेसु पव्वइएसु भरहेण बाहुबलिणो दूओ पेसिओ ।

सो ते पव्वइए सोउं आसुरुत्तो, ते बाला तुमए पव्वाविआ, अहं पुण जुद्धसमत्थो, ता एहि, किं वा ममंमि अजिए भरहे तुमे जिअंति । ततो सव्वबलेण दोवि मिलिआ देसंते ।

बाहुबलिणा भणिअं-किं अणवराहिणा लोगेण मारिएणं ? तुमं च अहं च दुवेऽवि जुज्झामो । एवं होउत्ति ।

तेसिं पढमं दिट्ठिजुद्धं जायं, तत्थ भरहो पराजिओ, पच्छा वायाए, तत्थ वि भरहो पराइओ, एवं बाहाजुद्धेण पराजिओ मुट्ठिजुद्धेऽवि पराजिओ, दंडजुद्धेऽवि जिप्पमाणो भरहो चिंतियाइओ-किं एसेव चक्की ? जेणाहं दुब्बलोत्ति, तस्स एवं चिंतंतस्स देवयाए आउहं दिण्णं चक्करयणं. ताहे सो तेणं गहिएणं पहाविओ ।

इओ बाहुबलिणा दिट्ठो, गहियदिव्वरयणो आगओ, सगव्वं चिंतियं चाणेण-सममेएण भंजामि एयं, किं पुण तुच्छाण कामभोगाण कारणा भट्ठनियपइण्णं एयं मम वावाइउं न जुत्तं, सोहणं मे भाउगेहिं अणुट्ठिअं । अहमवि तमणुट्ठामित्ति चिंतिऊण भणियं चाणेण-धिसि धिसि पुरिसत्तणं ते अहम्मजुद्धपवत्तस्स अलं मे भोगेहिं, गेण्हाहि रज्जं, पव्वयामित्ति, मुक्कदंडो पव्वइओ ।

भरहेण बाहुबलिस्स पुत्तो रज्जे ठविओ।

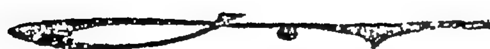
बाहुबली विचिंतेइ–तायसमीवे भाउणो मे लहुयरा समुप्पण्णनाणाइसया, ते किह निरइसओ पिच्छामि ?। " एत्थेव ताव अच्छामि जाव केवलनाणं समुप्पण्णं ति, " । एवं सो पडिमं ठिओ, माणपव्वय सिहरे।

जाणइ सामी तहवि न पट्ठवेइ, अमूढलक्खा तित्थयरा । ताहे संवच्छरं अच्छइ, काउस्सग्गेणं, वल्लीविताणेणं वेढिओ, पाया य वम्मीयनिग्गएहिं भुयंगेहिं। पुण्णे य संवच्छरे भगवं बंभीसुंदरीओ पट्ठवेइ, पुव्विं न पट्ठविआ, जेण तया सम्मं न पडिवज्जइत्ति, ताहिं सो मग्गंतीहिं वल्लीतणवेढिओ दिट्ठो, परूढणं महल्लेणं कुच्चेणंति, तं दट्ठुण वंदिओ, इमं च भणियं–ताओ आणवेइ "न किर हत्थिविलग्गस्स केवलनाणं समुप्पज्जइत्ति" भणिऊणं गयाओ।

ताहे पचिंतितो–कहिं एत्थ हत्थी ?, ' '।

ताओ अ अलियं न भणाति, ततो चिंततेण णायं जहा–माणहत्थित्ति । को य मम माणो ?, वच्चामि भगवंतं वंदामि ते य साहुणोत्ति, पादे उक्खित्ते केवलनाणं समुप्पण्णं, ताहे गंतूण केवलिपरिसाए ठिओ।

ताहे भरहोऽवि रज्जं भुंजइ।



# मेअंज्जरिसिचरियम्.

अण्णया सो माइसवत्तिं भणइ–गेण्ह रज्जं, पुत्ताण ते भवउत्ति, अहं पव्वयामि। सा णेच्छइ, एएण रज्जं आयत्तंति।

तओ सा अतिज्जाणनिज्जाणेसु रायलच्छीए दिप्पंतं पासिऊण चिंतेइ–मए पुत्ताण रज्जं दिज्जंतं ण इच्छियं, तेवि एवं सोभन्ता, इयाणी वि णं मारेमि। छिद्दाणि मग्गइ। सो य छूहालू, तेण सूतस्स संदेसओ दिण्णो, एत्तो च्चेव पुव्वण्हियं पट्ठविज्जासि, जइ विरावेमि। सूएण सीहकेसरओ मोदओ चेडीए हत्थेण विसज्जिओ। पियदंसणाए दिट्ठो। भणइ-पेच्छामि णं ति। तीए अप्पितो। पुव्वं णाए विसमक्खिया हत्था कया, तेहिं सो विसेण मक्खिओ। पच्छा भणइ–अहो! सुरभी मोयगोत्ति पडिअप्पिओ। चेडीए ताए गंतूण रण्णो समप्पिओ।

ते य दोवि कुमारा रायसगासे अच्छंति। तेण चिंतियं-किह अहं एतेहिं छुहाइएहिं खाइस्सं? तेण दुहा काऊण तेसिं दोण्हवि सो दिण्णो। ते खाइउमारद्धा, जाव विसवेगा आगंतुं पव्वत्ता।

राइणा संभंतेण वेज्जा सद्दाविता। सुवण्णं पाइया, सज्जा जाया। पच्छा दासी सद्दाविया, पुच्छिया भणइ–ण केण वि

दिट्ठो, णवरं एयाणं मायाए परामुट्ठो। सा सद्दाविया भणिया-पावे ! तदा णेच्छसि रज्जं दिज्जंतं, इयाणिमिमिणाहं ते अकयपरलोयसंवलो संसारे छूढो होंतोच्चि तेसि रज्जं दाऊण पव्वइओ।

अण्णया संघाडओ साहूण उज्जेणीओ आगओ। सो पुच्छिओ–तत्थ णिरुवसग्गं?। ते भणंति-णवरं रायपुत्तो पुरोहियपुत्तो य वाहिन्ति पासंडत्थे साहूणो य। सो गओ अमरिसेणं तत्थ। विस्सामिओ साहूहिं, ते य संभोइया साहू, भिक्खावेलाए भणिओ–आणिज्जउ। भणइ–अत्तलाभिओ अहं, णवरं ठवणाकुलाणि साहह। तेहिं से चेल्लओ दिण्णो, सो तं पुरोहियघरं दंसित्ता पडिगओ। इमोवि तत्थेव पइट्ठो वड्डवड्डेणं सद्देणं धम्मलाभेइ। अंतउरिआओ निग्गयाओ हाहाकारं करेंतीओ। सो वड्डवड्डेणं सद्देणं भणइ–किं एयं साविएत्ति। ते णिग्गया बाहिं बारं बंधंति। पच्छा भणंति–भगवं ! पणच्चसु।

सो पडिग्गहं ठवेऊण पणच्चिओ। ते ण याणंति वाएउं। भणंति–जुज्झामो दोवि एक्कसरा ते आगया, मम्मेहिं आहया, जहा जंताणि तहा खलखलाविआ। तओ णिसिट्ठं हणिऊण बाराणि उग्घाडित्ता गओ, उज्जाणे अच्छति। राइणो कहियं, तेण मग्गाविओ। साहू भणंति–पाहूणओ आगओ, ण याणामो। गवेसंतेहिं उज्जाणे दिट्ठो, राया गओ खामिओ य। णेच्छइ मोत्तुं, जइ पव्वयंति तो मुयामि। ताहे पुच्छिया, पडिसुयं। एगत्थ गहाय चालिया जहा सट्ठाणे ठिया संधिणो। लोयं काऊण पव्वाविया, रायपुत्तो सम्मं करेति मम पित्तियत्तो त्ति। पुरोहियसुयो दुगंछइ–अम्हे एएण कवडेण पव्वाविया।

दोवि मरिऊण देवलोगं गया, संगारं करेंति–जो पढमं चयइ तेण सो संबोहेयव्वो। पुरोहियसुओ चइऊण तीए दुगुंछाए रायगिहे मेईए पोट्टे आगओ, तीसे सिट्ठिणी वयंसिया। सा किह जाया ? सा मंसं विक्किणइ। ताए भण्णइ, मा अण्णत्थ हिंडाहि, अहं सव्वं किणामि। दिवसे २ आणेइ। एवं तासिं पीई घणा जाया। तेसिं चेव घरस्स समोसीइयाणि ठियाणि। सा य सेट्ठिणी णींदू। ताहे मेइए रहस्सियं चेव तीसे पुत्तो दिण्णो। सेट्ठिणीए धूया मइया जाया, सा मेईए गहिया। पच्छा सा सेट्ठिणी तं दारगं मेइए पाएसु पाडेति, तुब्भ पभावेण जीवउत्ति। तेण से नामं कयं मेयज्जोत्ति। संवड्ढिओ, कलाओ गाहिओ। संबोहिओ देवेण, ण संबुज्झइ। ताहे अट्ठण्हं इब्भकण्णगाणं एगदिवसेण पाणी गेण्हाविओ, सिबियाए णगरिं हिंडइ, देवोवि मेयं अणुपविट्ठो रोइउमारद्धो–जइ ममवि धूया जीवंतिया तीसेवि अज्ज विवाहो कओ होंतो, भत्तं च मेताण कयं होंतं। ताहे ताए मेईए जहावत्तं सिट्ठं, तओ रुट्ठो, देवाणुभावेण य ताओ सिबियाओ पाडिओ, तुमं असरिसीओ परिणेसित्ति खड्डाए छूढो। ताहे देवो भणइ–किह ?। सो भणइ–अवण्णो। भणइ–एत्तो मोएहि किंचिकालं, अच्छामि बारस वरिसाणि। तो भणइ–किं करेमि ?। भणइ–रण्णो धूयं दवावेहि, तो सव्वाओ अकिरियाओ ओहाडियाओ भविस्संति। ताहे से छगलओ दिण्णो। सो रयणाणि वोसिरइ, तेण रयणाण थालं भरियं। तेण पिया भणिओ–रण्णो धूयं वरेहि।

रयणाणं थालं भरेत्ता गओ। किं मग्गसि ?, धूयं। णिच्छूढो। एवं थालं दिवसे २ गेण्हइ, ण य देइ। अभओ भणइ–कओ रयणाणि ?। सो भणइ–छगलओ हगइ। अम्हवि

दिज्जउ । आणीओ, मउगंगधाणि वोसिरइ । अमओ भणइ-देवाणुभावो । किं पुण ?, परिक्खिज्जउ, किह ?, भणइ-राया दुक्खं वेब्भारपव्वतं सामिं वंदओ जाति, रहमग्गं करेहि । सो कओ । अज्जवि दीसइ ।

भणिओ-पागारं सोवण्णं करेहि, कओ ।

पुणोवि भणिओ-जइ समुद्दं आणेसि, तत्थ ण्हाओ सुद्धो होहिसि, तो ते दाहामो । आणीओ, वेलाए ण्हाविओ ।

विवाहो कओ सिबियाए हिंडंतेण, ताओवि से अण्णाओ आणियाओ ।

एवं भोगे भुंजंति बारसवरिसाणि । पच्छा बोहितो ।

महिलाहि वि बारस वरिसाणि मग्गियाणि, दिण्णाणि य । चउव्वीसाए वासेहिं सव्वाणिवि पव्वइयाणि । णवपुव्वी जाओ । एकल्लविहारपडिमं पडिवण्णो, तत्थेव रायगिहे हिंडइ, सुवण्णकारगिहमागओ ।

सो य सेणियस्स सोवण्णियाणं जवाणमट्ठसतं करेइ, चेइयच्चणियाए परिवाडिए सेणिओ कारेइ तिसंझं ।

तस्स गिहं साहू अइगओ । तस्स एगाए वायाए भिक्खा ण णीणिया । सो य अइगओ । ते य जवा कोंचएण खाइया । सो आगओ ण पेच्छइ । रण्णो य चेतियच्चणियवेला ढुकइ । अज्ज अट्ठिखंडाणि कीरामित्ति, साधुं संकइ, पुच्छइ, तुण्हिक्को अच्छइ । ताहे सीसावेढेण बंधति । भणिओ य-साह जेण गहिया । तहा आवेढिओ जहा अच्छीणि भूमीए

पडियाणि। कोंचओ य दारुं फोडेंतेण सिलिंकाए आहओ गलए, तेण वन्ता। लोगो भणइ—पाव! एए ते जवा।

सोवि भगवं कालगओ, सिद्धो य।

लोगो आगओ, दिट्ठो मेतज्जो। रण्णो कहियं, वज्झाणि आणत्ताणि। दारं ठइत्ता पव्वइयाणि भणंति—सावग! धम्मेण वड्ढाहि, मुक्काणि। भणए—जइ उप्पव्वयह तो भे कविल्लीए कड्ढेमि।

एवं समइयं अप्पए य परे य कायव्वं।

( तथा च कथानकार्थैकदेशप्रतिपादनायाह )—

जो कोंचगावराहे, पाणिदयाए कोंचगं तु णाइक्खे।
जीवियमणपेहंतं, मेयज्जरिसिं णमंसामि॥ ८६९॥



# तेतलिपुत्तचरियम्.

तेतलिपुरणयरे कणगरहो राया, पउमावई देवी । राया भोगलोलो जाते २ पुत्ते वियंगेइ ।

तेतलिसुओ अमच्चो, कलाओ पूसियारसेट्ठी, तस्स धूया पोट्टिला आगासतलगे दिट्ठा, मग्गिआ, लद्धा य ।

अमच्चो य एगंते पउमावईय भण्णइ—एगं कहवि कुमारं सारक्खह, तो तव य मम य भिक्खाभायणं भविस्सइ त्ति । मम उयरे पुत्तो, एयं रहस्सगयं सारक्खेमो। संपत्ती य, पोट्टिला देवी य समं चेव पसूया । पोट्टिलाए दारिया देवीए दिण्णा, कुमारो पोट्टिलाए । सो संवड्ढइ, कलाओ य गेण्हइ ।

अण्णया पोट्टिला अणिट्ठा जाया, णाममवि ण गेण्हइ।

अण्णया पव्वइयाओ पुच्छइ—अत्थि किंचि जाणह, जेणं अहं पिया होज्जा। ताओ भणंति—ण वट्टइ एयं कहेउं। धम्मो कहिओ, संवेगमावण्णा । आपुच्छइ—पव्वयामि । भणइ—जइ संबोहेसि। ताए पडिस्सुयं । सामण्णं काउं देवलोगं गया ।

सो राया मओ । ताहे पउरस्स दंसेइ कुमारं, रहस्सं च भिंदइ, ताहे सोऽभिसित्तो ।

कुमारं माया भणइ—तेतलिसुयस्स सुट्ठु वट्टेज्जाहि, तस्स पहावेण तं सि राया जाओ ।

तस्स णामं कणगज्झश्रो ।

ताहे सव्वट्ठाणेसु अमच्चो ठविश्रो ।

देवो तं बोहेइ, ण संबुज्झइ । ताहे रायाणगं विपरिणामेइ । जश्रो जश्रो ठाइ तश्रो तश्रो राया परंमुहो ठाइ । भीश्रो घरमागश्रो, सोऽवि परियणो णाढाइ, सुट्ठुतरं भीश्रो । ताहे तालपुडं विसं खाइ, ण मरइ । कंको असी खंधे णिसिश्रो, ण छिंदइ । उव्वंधइ, रज्जु छिंदइ, पाहाणं गलए बंधित्ता अत्थाहं पाणियं पविट्ठो, तत्थवि थाहो जाश्रो । ताहे तणकूडे अग्गि काउं पविट्ठो, तत्थवि ण डज्झइ ।

ताहे णयराश्रो णिप्फिडइ, जाव पिट्ठश्रो हत्थी धाडेइ पुरश्रो पवातखड्डा, दुहश्रो अचक्खुफासे मज्झे सराणि पतंति ।

तत्थ ठिश्रो । ताहे भणइ—हा पोट्टिले साविगे २ जइ णित्थारेज्जा, श्राउसो पोट्टिले ! कश्रो वयामो ? । ते श्रालावगे भणइ जहा तेतलिणाते ॥

ताहे सा भणइ—भीयस्स खलु भो पव्वज्जा । श्रालावगा ।

तं दट्ठूण संबुद्धो भणइ—रायाणं उवसामेहि, मा भणिहि त्ति—रुट्ठो पव्वइश्रो । ताहे साहरियं जाव समंततो मग्गिज्जइ । रण्णो कहियं, सहमायाए णिग्गश्रो खामेत्ता पवेसिश्रो । निक्खमणासिवियाए णीणिश्रो, पव्वइश्रो ॥

तेण ददं श्रावइगाहिएणावि पच्चक्खाणे समया कया ॥



# जमदग्गि–परसुरामचरियम्.



वसंतपुरे णयरे उच्छन्नवंसो एगो दारगो देसंतरं संकममाणो सत्थेण उज्झिओ तावसपल्लिं गओ, तस्स नामं अग्गिओ त्ति । तावसेण संवड्ढिओ, जमो नामं सो तावसो, जमस्स पुत्तोत्ति जमदग्गिओ जाओ । सो घोरं तवचरणं करेइ, विक्खाओ जाओ ।

इओ य दो देवा, वेसाणरो सड्ढो, धन्नंतरी तावसभत्तो । ते दोवि परोप्परं पन्नवेंति, भणंति य–साहुतावसे परिक्खामो ।

आह सड्ढो–जो अम्हं सव्वअंतिगओ तुब्भ य सव्वप्पहाणो ते परिक्खामो ।

इओ य मिहिलाए णयरीए तरुणधम्मो पउमरहो राया, सो चंपं वच्चइ वासुपुज्जसामिस्स पामूलं पव्वयामित्ति । तेहिं सो परिक्खिज्जइ भत्तेणं पाणेण य, पंथे य विसमे सो सुकुमालओ दुक्खाविज्जइ, अणुलोमे य से उवसग्गे करिंति । सो धणियतरागं थिरो जाओ, सो तेहिं न खोभिओ ।

अन्ने भणंति–सावओ भत्तपच्चक्खाइओ । ते सिद्धपुत्तरूवेणं गया, अइसए साहिंति, भणंति य–मा इमं करेहि जहा चिरं जीवियव्वं । सो भणइ–बहुओ मे धम्मो होहीति, न सक्को खोभेउं ।

गया जमदग्गिस्स मूलं । सउणरूवाणि कयाणि । कुच्चे से घरओ कओ । सउणओ भणइ–"भद्दे ! जामि हिमवंतं," सा

न देइ "मा ण एहिसित्ति"। सो सवहे करेइ–गोधायकाइं जहा एमित्ति। सा भणइ–न एएहिं पत्तियामित्ति, जइ एयस्स रिसिस्स दुक्कियं पियसित्ति, तो ते विसज्जेमि। सो रुट्ठो, तेण दोवि दोहिंवि हत्थेहिं गहियाणि। पुच्छियाणि भणंति–महरिसि! अणवच्चो सि त्ति। सो भणइ–सच्चयं। खोभिओ।

एवं सो सावगो जाओ देवो।

इमोऽवि ताओ आयावणाउ ओत्तिन्नो मिगकोट्ठगं णयरं जाइ। तत्थ जियसत्तू राया, सो उट्ठिओ–किं देमि?, धूयं देहित्ति। तस्स धूयासयं। जा तुमं इच्छइ सा तुज्झत्ति। कन्नंतेउरं गओ, ताहिं दट्ठूण निच्छूढं, न लज्जिसित्ति भणिओ। ताओ खुज्जीकयाओ। तत्थेगा रेणुएणं रमइ तस्स धूया, तीए णेणं फलं पणामियं, इच्छसित्ति य भणिया। तीए हत्थो पसारिओ, निज्जंतीए उवट्ठियाओ खुज्जाओ, सालियरूवए देहि, ताओ अखुज्जाओ कयाओ। कन्नकुज्जं नयरं संवुत्तं। इयरी वि णीया आसमं। सगोमाहिसो परियणो दिन्नो, संवड्ढिया, जोव्वणपत्ता जाहे जाया ताहे विवाहधम्मो जाओ।

अण्णया उदुंमि जमदग्गिणा भणिया–अहं ते चरुगं साहेमि, जेणं ते पुत्तो बंभणस्स पहाणो होहिति।

तीए भणियं–एवं कज्जउत्ति। मज्झ य भगिणी हत्थिणापुरे अणंतवीरियस्स भज्जा, तीसेऽवि साहेहि खत्तियचरुगंति। तेण साहिओ।

सा चिंतेइ–अहं ताव अडविमिगी जाया, मा मम पुत्तो वि एवं नासउत्ति तीए खत्तियचरू जिमिओ। इयरीए इयरो पेसिओ। दोण्हवि पुत्ता जाया। तावसीए रामो, इयरीए कत्तवीरिओ। सो रामो तत्थ संवड्ढइ।

अन्नया एगो विज्जाहरो तत्थ समोसढो, तत्थ एसो पडिलग्गो, तेण सो पडिचरिओ, तेण से 'परसुविज्जा' दिण्णा, सरवणे साहिया।

अण्णे भणंति—जमदग्गिस्स परंपरागयत्ति परसुविज्जा, सा रामो पाढिओत्ति।

सा रेणुगा भगिणीघरं गयत्ति, तेण रण्णा समं संपलग्गा। तेण से पुत्तो जाओ, सपुत्ता जमदग्गिणा आणिया, रुट्ठो। सा रामेण सपुत्तिया मारिया। सो य किर तत्थेव इसुसत्थं सिक्खिओ। तीसे भागिणीए सुयं, रण्णो कहियं, सो आगओ, आसमं विणासित्ता गावीए घेत्तूणं पहाविओ। रामस्स कहियं, तेण पहाविऊण परसुणा मारिओ। कत्तवीरिओ य राया जाओ, तस्स देवी तारा। अन्नया से पिउमरणं कहियं, तेण आगएणं जमदग्गी मारिओ। रामस्स कहियं, तेणागएणं जलंतेणं परसुणा कत्तवीरिओ मारिओ। सयं चेव रज्जं पडिवन्नं।

इओ य सा तारा देवी तेण संभमेण पलायंती तावसासमं गया, पडिओ से मुहेणं गब्भो। नामं कयं सुभूमो। रामस्स परसू जहिं २ खत्तियं पेच्छइ तहिं तहिं जलइ। अन्नया तावसासमस्स पासेणं वीईवयइ, परसू पज्जलिओ। तावसा भणंति—अम्हे च्चिय खत्तिया।

तेण रामेण सत्त वारा निक्खत्ता पुहवी कया, हणूणं थालं भरियं।

एवं किर रामेणं कोहेणं खत्तिया वहिया।

# चाणक्क-कहाणगम्.

गोल्लविसए चणयग्गामो, तत्थ य चणगो माहणो, सो य सावओ । तस्स घरे साहू ठिया । पुत्तो से जाओ सह दाढाहिं, साहूण पाएसु पाडिओ, कहियं च-राया भविस्सइत्ति । मा दुग्गइं जाइस्सइत्ति दंता घट्ठा । पुणोऽवि आयरियाणं कहियं । भणइ-किं कज्जउ ? एत्ताहे विंबंतरिओ भविस्सइ । उम्मुक्कबालभावेण चोद्दस विज्जाट्ठाणाणि आगमियाणि, सो य सावओ संतुट्ठो । एगाओ भद्दमाहणकुलाओ भज्जा से आणिया । अण्णया कम्हिवि कोउगे माइघरं भज्जा से गया । केइ भणंति-भाइविवाहे गया । तीसे य भगिणीओ अण्णेसिं खद्धादाणियाणं दिण्णेल्लियाओ । ताओ अलंकियविहूसियाओ आगयाओ, सव्वोऽपि परियणो ताहिं समं संलवएति । सा एगंते अच्छइ, अद्धिई जाया, घरं आगया ससोगा । निव्बंधे सिट्ठं । तेण चिंतियं-नंदो पाडलिपुत्ते देइ, तत्थ वच्चामि ।

तओ कत्तियपुण्णिमाए पुव्वण्णत्थे आसणे पढमे णिसण्णो, तं च तस्स सन्नीपतियस्स सया ठविज्जइ । सिद्धपुत्तो य णंदेण समं तत्थ आगओ । भणइ-एस बंभणो णंदवंसस्स छायं अक्कमिऊण ठिओ । भणिओ दासीए-भगवं ! बितीए आसणे णिवेसाहि । अत्थु, तितिए आसणे कुंडियं ठवेइ, एवं

तातिए दंडयं, चउत्थे गणित्तियं, पंचमे जण्णोवइयं, विट्ठोत्ति निच्छूढो ।

पाओ उक्खित्तो । अण्णया य भणइ—

(कोशेन भृत्यैश्च निबद्धमूलं, पुत्रैश्च मित्रैश्च विवृद्धशाखम्।
उत्पाट्य नन्दं परिवर्तयामि, महाद्रुमं वायुरिवोग्रवेगः॥१॥)

निग्गओ मग्गइ पुरिसं, सुयं चऽणेण बिंबंतरिओ राओ होहामित्ति । नंदस्स मोरपोसगा, तेसिं गामं गओ परिव्वायगलिंगेणं ।

तेसिं च महत्तरधूयाए चंदपियणे दोहलो । सो समुदाणितो गओ । पुच्छंति, सो भणइ—जइ इमं मे दारगं देह तो णं पाएमि चंदं । पडिसुणेंति, पडमंडवे कए तद्दिवसं पुण्णिमा, मज्झे छिड्डं कयं, मज्झगए चंदे सव्वरसालूहिं दव्वेहिं संजोएत्ता दुद्धस्स थालं भरियं । सद्दाविया पेच्छइ पिबइ य । उवरिं पुरिसो अच्छाडेइ । अवणीए जाओ पुत्तो, चंदगुत्तो से नामं कयं । सोऽवि ताव संवड्ढइ, चाणक्को व धाउबिलाणि मग्गइ । सो य दारगेहिं समं रमइ रायणीईए, बिभासा, चाणक्को पडिएइ, पेच्छइ । तेणावि मग्गिओ—अम्हवि दिज्जउ । भणइ—गावीओ लएहिं, मा मारेज्जा कोई । भणइ—वीरभोज्जा पुहवी । णातं जहा विण्णाणंपि से अत्थि । पुच्छिओ—कस्सत्ति ? । दारएहिं कहियं—परिव्वायगपुत्तो एसो । अहं सो परिव्वायगो । जामु जा ते रायाणं करेमि, पलाओ, लोगो मिलिओ, पाडलिपुत्तं रोहियं ।

चंदेण भग्गो परिव्वायगो, आसेहिं पिट्ठिओ लग्गो। चंदगुत्तो पउमसरे निव्वुडो, ( इमो उपस्पृशति ) सण्णाए भणइ–वोलीणोत्ति। अन्ने भणन्ति–चंदगुत्तं पउमिणीसरे छुभि-त्ता रयओ जाओ। पच्छा एगेग जच्चवन्हीकिसोरगएण आसवारेण पुच्छिओ भणइ–एस पउमसरे निचिट्ठो। तओ आ-सवारेण दिट्ठो। तओऽणेण घोडगो चाणक्कस्स अल्लितो, खग्गं मुक्कं, जाव निगुडिउं जलोयरणट्ठयाए कंचुगं भिल्लइ, तावऽणेण खग्गं घेत्तूण दुहा कओ। पच्छा चंदगुत्तो हक्कारिय चडाविओ, पुणो पलाया। पुच्छिओऽणेण चंदगुत्तो–जं वेलं तं सि सिट्ठो तं वेलं किं तुमे चिंतियं ? तेण भणियं–धुवं एवमेव सोहणं भवइ, अज्जो चेव जाणइत्ति।

तओऽणेण चिंतियं–जोग्गो एस, न विपरिणमइत्ति। पच्छा चंदगुत्तो छुहाइओ। चाणक्को तं ठवेत्ता भत्तस्स अइगओ, बीहेइ य–मा एत्थ नज्जेज्जा, मोडोडस्स बाहिं निग्गयस्स पोट्टं फालियं, दहिकूरं गहाय गओ। जिमिओ दारओ।

अण्णया अण्णत्थ गामे रत्तिं समुयाणेइ, थेरीए पुत्तगभंडाणं विलेवी वट्टिया। एक्केण मज्झे हत्थो छूढो, दड्ढो, रोवइ। ताए भण्णइ–चाणक्कमंगलयं। पुच्छियं, भणइ–पासाणि पढमं घेप्पंति। गओ हिमवंतकूडं, पव्वइओ राया, तेण समं मित्तया जाया। भणइ–समं समेण विभजामो रज्जं। उपवेंताणं एगत्थ णयरं न पडइ, पविट्ठो तिदंडी, वत्थूणि जोएइ, इंदकुमारियाओ दिट्ठाओ। तासिं तणएण ण पडइ, मायाए णीणावियाओ, पडियं णयरं।

पाडलिपुत्तं रोहियं, नंदो धम्मदारं मग्गइ, एगेण रहेण जं तरसि तं नीणाहि। दो भज्जाओ एगा कण्णा दव्वं च

णीणेइ। कण्णा चंदगुत्तं पलोएइ, भणिया—जाहित्ति। ताहे विलग्गंतीए चंदगुत्तरहे णव अरगा भग्गा। तिदंडी भणइ—मा वारेहि, नवपुरिसजुगाणि तुज्झ वंसो होहित्ति अइयओ, दोभागीकयं रज्जं।

एगा कण्णगा विसभाविया, तत्थ पव्वयगस्स इच्छा जाया, सा तस्स दिण्णा। अग्गिपरियंचणे विसपरिगओ मरिउमारद्धो भणइ—वयंस! मरिज्जइ। चंदगुत्तो रुंभामित्ति ववसिओ, चाणक्केण भिउडी कया, णियत्तो। दोवि रज्जाणि तस्स जायाणि।

नंदमणुसा चोरियाए जीवंति, चोरग्गाहं मग्गइ। तिदंडी बाहिरियाए नलदामं मुइंगमारणे दट्ठुं आगओ, रण्णा सद्दाविओ, आरक्खं दिण्णं। वीसत्था कया, भत्तदाणेण सकुडुंबा मारिया। आणाए—वंसीहिं अंबगा परिक्खित्ता, विवरीए रुट्ठो, पलीविओ सव्वो गामो तेहिं गामीलएहिं कप्पडियत्ते भत्तं न दिण्णं ति काउं।

कोसनिमित्तं पारिणामिया बुद्धी—जूयं रमइ कूडपासएहिं। सोवण्णं थालं दीणाराणं भरियं, जो जिणइ तस्स एयं, अहं जिणामि एगो दीणारो दायव्वो। अइचिरं ति अन्नं उवायं चिंतेइ। णागराण भत्तं देइ मज्जपाणं च।

मत्तेसु पणच्चिओ, भणइ—"दो मज्झ धाउरत्ता कंचणकुंडिया तिदंडं च रायावि य वसवत्ती, एत्थवि ता मे होलं वाएहिं"

अण्णो असहमाणो भणति—गयपोययस्स मत्तस्स उप्पइयस्स जोअणसहस्सं पए पए सयसहस्सं, एत्थवि ता मे होलं वाएहिं।

अण्णो भणइ–तिल्लआढयस्स वुत्तस्स निप्फण्णस्स बहुसइयस्स तिले तिले सयसहस्सं, ता मे होलं वाएहिं ।

अण्णो भणइ–नवपाउसंमि पुण्णाए गिरिणईयाए सिग्घवेगाए एगाहमहियमेत्तेण नवणीएण पालिं बंधामि, एत्थवि ता मे होलं वाएहि ।

अन्नो भणइ–जच्चाण नवकिसोराण तद्दिवसेण जायमेत्ताण केसेहिं नहं छाएमि, एत्थवि ता मे होलं वाएहि ।

अन्नो भणइ–दो मज्झ अत्थि रयणा सालि पसूई य गद्दभिया य छिन्ना छिन्नावि रुहंति, एत्थवि ता मे होलं वाएहि ।

अन्नो भणइ–सयसुक्किल निच्चसुयंधो भज्ज अणुव्वय नत्थि पवासो निरिणो य दुपंचसओ, एत्थवि ता मे होलं वाएहिं ।

एवं णाऊण रयणाणि मग्गिऊण कोट्ठाराणि सालीण भरियाणि । गद्दभियाए पुच्छिओ छिन्नाणि २ पुणो जायंति । आसा एगदिवसजाया मग्गिया, एगादिवसियं णवणीयं ।

एस परिणामिया चाणक्कस्स बुद्धी ।



# संब-सुभाणूणं कीडाओ.



संब-भाणूणं कथाइ सयाए कीलंताणं पणी (णि) यं समुप्पण्णं--जस्स सउणो विचित्तं वासति सो जिणति कोर्डि ति। ठविया पासणिगा। बितियदिवसे भाणुणा सुओ आणीओ, संबेण सारिगा पज्जुण्णगिहलालिया कंतसंजोइयसुहुमविविहवण्णपिच्छच्छयणा एगदेसुट्ठियरोमखयखारसेगा।

सुगो पकड्ढिओ सिलोगजुयलं—

सतेसु जायते सूरो, सहस्सेसु य पंडिओ।
वत्ता सयसहस्सेसु, दाया जायति वा ण वा॥
इंदियाण जए सूरो, धम्मं चरति पंडिओ।
वत्ता सच्चवओ होइ, दाया भूयहिए रओ॥

त्ति पभणिउ सुओ ठिओ। सारिया संबेणं चोइया—मयणे! भणसु तुमं किंचि सुभासियं। सा भणइ—

सव्वं गीयं विलवियं, सव्वं नट्टं विडंबियं।
सव्वेआभरणा भारा, सव्वे कामा दुहावहा॥

ततो खारसित्ते पएसे छित्ता रसिउमारद्धा, भणइ य रसियावसाणे—देव! को वि मं पीलेइ, परित्तायसु, मरामि, मा मं उवेक्ख। तिगिच्छगा सद्दाविज्जंतु लहुं ति, ते मे परिबाधापडिगारं करेंति, नेहि मे देविसमीवं। एवमाइ कलुणं विलवंती पुणो वि चोइया—सुंदरि! अलं विसाएण, भणसु किंचि, ततो जं वोच्छिसि तं सव्वं कीरइ। ततो भणइ—

उक्कामिव जोइमालिणिं, सुभुयंगामिव पुप्फियं लतं ।
विबुधो जो कामवत्तिणिं, मुयई सो सुहिओ भविस्सइ ॥

खारे छिक्का पुणो रसइ विलवइ य । पुणो भणिया—पढसु ताव किंचि । ततो भणति—

न सुयणवयणं हि निट्ठुरं, न दुरहिगंधवहं महुप्पलं ।
न जुवइहिययम्मि धीरया, न य निंवतीसु य सोहियं थिरं ॥

'एवं सा विचित्तं वासइ' त्ति जियं संबेण । 'सुओ सिलोगजुयलमेव लवइ' त्ति पराजिओ, भोयणवेलाए य सद्दाविओ सुभाणू रुद्धो 'पणिए कोडिं देहि' त्ति । सुयं सच्चभामाए, कयं च कण्हस्स विदियं । पेसिओ कंचुकीओ संबं भणइ—

कुमार ! सुव्वउ, 'भाणू भुत्तभोयणो दाहिति' त्ति देवो आणवेइ । संबो भणति—जो सिणेहिओ सो दाऊण णं नेउ अथवा एस जाणइ जं कायव्वं । सुभाणू भएण ण वच्चइ, णिवेइयं कण्हस्स, दिण्णे विसज्जिओ । दुइंता पूइया संबेण पियपुच्छगाण य दीणाणाहाण य दत्तं वित्तं ।

केसु वि दिवसेसु गतेसु पुणो भाणू भणइ—संब ! होउ पणीयं । जस्स उक्कडा गंधा सो जिणइ दोन्नि कोडीउ । संबो भणइ—अलं तुमे सह पणिएण, तुमं जिओ देवस्स कहेसि । सो भणइ—अंबाए कहियं देवस्स, न मया । ततो 'एवं होउ' त्ति कया सक्खी । संबेण चिंतियं—गंधजुत्तीसु भाणू न जिणिज्जा, देवसंतएहिं गंधेहिं सो विलिंपिज्जा, करेमि घाणपडिलोमदव्वसंजोगं ति । ततो णेण पलंडु—लसुण—वेकड—हिंगूणि छगलमुत्तेण सह रुइयाणि सरावसंपुडेण आणीयाणि । सुभाणू य पुव्वपविट्ठो सभं सुरहिविलेवणो । पसंसिओ गंधविहाणकुसलेहिं । संबो य सभादुवारे विलित्तो

घाणपडिकूलेयं लसुणादिजोएण। तेण य गंधेण परब्भाहतो सभागओ कुमारलोओ संवरियनकदुवारो समंतओ विपलाओ-संवसामि ! अइउक्कडा गंधा, पसीय, विसज्जिज्जंतु, कुणह पसायं । तेण भणिया—भणह निव्वयणं । ते भणंति—जियं तुमे । भाणू भणइ—दुरहिगंधा एयस्स । संबेण भणियं—उक्कडस्स पणियं, न य विसेसो सुभाऽसुभेसु कओ । पासणिएहिं संबपक्खो उक्खित्तो । जिओ भाणू रुद्धो । देवीए रडंतीए वासुदेवस्स कहियं । तेण पेसिए ण मुक्को, दिण्णो विसज्जिओ । संबेण परियणस्स दिण्णो विभत्तो अत्थो, दिण्णं दुद्दंताण य ।



# कंसस्स पुव्वभवो कण्हजम्मो य.

कंसेण य पगतीओ रंजेऊण वल्लहभावेण उग्गसेणो वद्धो। तस्स य पियरम्मि पओसो पुव्वभविओ अइसयनाणिणा साहुणा मे कहिओ । सो किर अणंतरभवे बालतवस्सी आसि । सो मासं मासं खममाणो महुरिपुरिमागतो । उट्ठियाए मासं मासं गहेऊण पारेइ । पगासो जातो । उग्गसेणेण य निमंतिओ–मज्झं गिहे भयवता पारेयव्वं । पारणकाले वक्खित्तचित्तस्स वीसरिओ । सो वि अण्णत्थ भुत्तो । एवं बितिय–तइयपारणासु । सो पदुट्ठो ‘ उग्गसेणवहाय भवामि ’ त्ति कयनिदाणो कालगतो उववण्णो उग्गसेणघरिणीए उयरे ।

तिसे य तिसु मासेसु दोहलो राइणो उयरवलिमंसे समुप्पण्णो। मंतीहि य सरसमंसवलीरयणाय वत्थे सवण्णकरणे य कए आलोए देवीए कप्पियाओ वलीओ । तीसे उवणीया । उवभुंजिऊण य विणीयडोहलाए कमेण य दंसिओ उग्गसेणो ।

तीए य ‘(ए) स गब्भे वड्ढिओ असंसयं कुलविणासो’ त्ति जाओ कंसमयीये मंजूसाए पक्खिवेऊण जमुणाए पवाहिओ गहिओ सोरिएण रसवाणियगेण संवड्ढिओ य मम समीवे । मया य एवं कारणं सुणेऊण एस जायसत्तु उग्गसेणस्स त्ति तस्स मोक्खे ण कओ पयत्तो ।

कलायरिओ य संगहिओ कुमारे गाहेउ कला अणा-

हट्ठिपमुहे । कंसेण वि णीओ सबहुमाणं महुरं संविहत्तो, विसेसेण से विणीओ मि होऊण । एवं मे वच्चइ कालो सूरसेणभवण ( वण ) संडेसु सपरिजणस्स ।

कयाइं च कंसाणुमए पत्थिया मो मत्तिकावती देवगस्स रण्णो धूयं वरेऊण देवइं । अंतरा य नेमिनारदो दिट्ठो पुच्छिओ य–अज्ज ! तुब्भेहिं दिट्ठपुव्वा अवस्सं देवई रायकण्णा, कहेह मे तीसे विणय रूवाऽऽगमे ।

ततो भणइ–जाणामि त्ति, सोम्म ! सुणाहि–सा देवयाणं सरिसी होज्जा रूवेण अंगविंदूपसत्थलक्खणकिण्णदेहबद्धा बंधवजणणयणकुमुदचंदलेहा (लेहा)दिकलाविहाणं जुवइजणजोगकुसला लक्खणदुवखनिव्वत्तणिज्जरूवा पुहविपइभारिया जोग्गा जणवण्णणिज्जा विणीया ।

मया य भणिओ नारदो–अज्ज ! जह ते सा मह कहिया तहा ममं पि जहाभूयं कहेहि से । ' एवं ' ति य वोत्तूण उप्पइओ । अम्हे वि सुहेहिं वसहि–पायरासेहिं पत्ता मित्तियावतिं नयरिं, कंसेण य बहुप्पयारं जाइओ देवको राया कण्णं ।

ततो णेण परिगणेऊण सोहणे दिणे दिण्णा देवकी । वत्ते कल्लाणे रायाणुरूवाये इड्ढीए दिण्णं च भारग्गसो सुवण्णं मणिणो य, महग्घा सयणा–ऽऽसणाऽच्छायणा–भायणविही य बहुविकप्पा, णिपुणपेसवग्गवंद (दं) बहुकदेसुब्भवं, गावीण य कोडीयं णंदगोयवल्लहगोकुलं । ततो ससुराणुयाओ सुरसरिसीए रिद्धीए निग्गतो मित्तियावइओ । नियत्तितो राया । कमेण पत्तो महुरं ।

पमोदे य वट्टमाणे कंसो ममं उवगओ पायवडिओ विण्णवेइ–देव ! महं देह जं अहं जायामि । मया भणियं–देमु,

भणसु दुयं ति। ततो पहट्ठमणसो कयंजली भणइ–देह मे देवईए सत्तगब्भे त्ति। 'तह' त्ति मया पडिवण्णं।

गते कंसे सुयं मया–अइमुत्तो किर कुमारसमणो कंसघरिणीए जीवजसाये मद्दुमत्ताये वाहित्रो 'देवरो' त्ति चिरं। तेण भयवया सव्वियया–सक्खणे! जीसे पगते पमुदिता नच्चसि तीए सत्तमो सुतो होहिति तव पिउणो पतिणो वहाय त्ति वोत्तूण अंतरहिओ गतो। कंसेण य सावमीएण सत्त गब्भा मग्गिओ त्ति। एवं नाम कीरउ जं मया पडिवण्णं सुद्धहियएण। एवं वच्चइ कालो।

तत्थ देवकीय छसुया मम वयणदोसेण कंसेण दुरप्पणा वहिया। कयाइं च देवकी देवी सत्त महासुमिणे पासित्ताणं महं कहेइ, जहा–मए सत्त सुमिणा दिट्ठा। वसुदेवो भणति (मया भणियं)–ता सुयणु! एस ते सत्तमो पुत्तो होहिति जहानिदिट्ठो अइमुत्तेण कंस–जरासंधविघाती, सुयसु विसायं अपुव्ववयणा चारणसमणा त्ति। तीए पहट्ठाए 'एवं' ति पडिस्सुयं। गएसु य केसु वि दिवसेसु वड्ढमाणे गब्भे देवीए विण्णविओ समागयाहिं पच्छण्णं–अज्जउत्त! कुणह पसायं, जत्तं कुणह देव! सत्तमगब्भस्स एक्को वि ता मे जीवउ पुत्तो, जं एत्थ पापकं तं अम्हं होहिति त्ति। मया वि य तेसिं पडिवण्णं एवं करिस्सं, निव्वुया होहि, संवुयमत्ता होहि त्ति।

पसवणकाले य कंसनिउत्ता मयहरका दिन्नपहावेणा सुणिसढ्ढं पसुत्ता। तो जातो कुमारो कयजायकम्मो मया नीओ। समणे णक्खत्ते जोगमुवागए वासे य वासमाणे देवया अदिट्ठं छत्तं धरेइ, दिविका य उभओ

पासे, सेओ वसहो पुरतो ठितो। उग्गसेणेण य पहाव-विम्हिएण भणिओ—वसुदेव! कहिं इमं महब्भुयं नेसि? त्ति। मया य तस्स पडिवण्णं—जहा होहिति महब्भूयं तहा त्ति तुमं अम्हं राया ण रहस्सभेदो कायव्वो त्ति।

तओ मं जउणाणईयथाहे दिण्णे उत्तिण्णो मि। पत्तो मि य वयं। तत्थ नंदगोवस्स घरिणी य जसोया पुव्वयरं दारियं पसूया। अप्पिओ तीए कुमारो। दारियं गहेऊण तुरियं नियगभवणमागतो। देवइसमीवे य तं निक्खिविऊण अवक्कंतो दुयं। कंसपरिचारियाओ य पडिबुद्धाओ तंवेलं। निवेइयं कंसस्स। तेण तीसे णक्कपुडं विणासियं 'अलक्खणा होउ' त्ति।



## माहणसरूवं.

जो लोए बंभणो वुत्तो, अग्गी वा महिओ जहा ।
सया कुसलसंदिट्ठं, तं वयं बूम माहणं ॥ १९ ॥

जो न सज्जइ आगंतुं, पव्वयंतो न सोअइ ।
रमए अज्जवयणंमि, तं वयं बूम माहणं ॥ २० ॥

जायरूवं जहामट्ठं, निद्धंतमलपावगं ।
रागद्दोसभयाईयं, तं वयं बूम माहणं ॥ २१ ॥

[ तवस्सियं किसं दन्तं, अवचियमंससोणिअं
सुव्वयं पत्तनिव्वाणं, तं वयं बूम माहणं ॥ १ ॥ ]

तसे पाणे वियाणित्ता, संगहेण य थावरे ।
जो न हिंसइ तिविहेणं, तं वयं बूम माहणं ॥ २२ ॥

कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया ।
मुसं न वयई जो उ, तं वयं बूम माहणं ॥ २३ ॥

चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं ।
न गिण्हइ अदत्तं जो, तं वयं बूम माहणं ॥ २४ ॥

दिव्वमाणुसतेरिच्छं, जो न सेवइ मेहुणं ।
मणसा काय वक्केणं, तं वयं बूम माहणं ॥ २५ ॥

जहा पोउमं जले जायं, नोवलिप्पइ वारिणा ।
एवं अलित्तं कामेहिं, तं वयं बूम माहणं ॥ २६ ॥

अलोलुअं मुहाजीवी, अणगारं अकिंचणं ।
असंसत्तं गिहत्थेसु, तं वयं बूम माहणं ॥ २७ ॥

जहिता पूव्वसंजोगं, नातिसंगे अ बंधवे ।
जो न सज्जइ एएसु, तंवयं बूम माहणं ॥ २८ ॥

नवि मुंडिएण समणो, न ॐकारेण बंभणो ।
न मुणी रण्णवासेणं, कुसचीरेण न तावसो ॥ ३० ॥

समयाए समणो होइ, बंभचेरेण बंभणो ।
नाणेण य मुणी होई, तवेणं होई तावसो ॥ ३१ ॥

कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ ।
कम्मुणा वइसो होइ, सुद्धो हवइ कम्मुणा ॥ ३२ ॥

ए ए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सियाणओ ।
सव्वसंगविणिमुक्कं, तं वयं बूम माहणं ॥ ३३ ॥

एवं गुणसमाउत्ता, जे भवंति दिउत्तमा ।
जे समत्थाउ उद्धत्तुं, परं अप्पाणमेव य ॥ ३४ ॥

इइ सम्मत्तो कहासंगहो.

